मानवता का स्तर

संयुक्त सभाओं में किये गए
पाँच महत्वपूर्ण व्याख्यान

अबुल हसन अली नदवी

अनुवादक
अतहर हुसैन
एम० एस० सी०, बी० एड०, कामिल, विशारद

www.abulhasanalinadwi.org

प्रकाशक :
अकेडमी आफ इस्लामिक रिसर्च एण्ड
पब्लिकेशन्स नदवा, लखनऊ

मानवता का स्तर
द्वितीय संस्करण (हिन्दी)-१९९८

Composed by: Nashir Computers & Printers
Gwynne Road, Aminabad, Lucknow

www.abulhasanalinadwi.org

भूमिका

न केवल भारतवर्ष वरन् इस आधुनिक युग एवं मानवीय संसार की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता यह है कि स्वार्थ एवं पक्षपात, जातिवाद तथा राजनीतिक उद्देश्यों से सर्वत्र स्वच्छंद एवं असम्बद्ध हो कर सामान्य जनता के समक्ष उन वास्तविकताओं एवं तथ्यों को रक्खा जाए जिन पर मानवता की सुरक्षा एवं कल्याण आधारित है, जिनकी उपेक्षा करके हमारी यह समस्त संस्कृति और पूर्ण मानव समाज इस समय भयंकर आपत्तियों से दो चार और जीवन मरण के असमंजस में ग्रस्त है।

इन तथ्यों से अपने-अपने युग में खुदा के पैग़म्बरों ने मानवजाति को अवगत कराया और उनके लिये कठोर परिश्रम तथा प्रयास किये। यह तथ्य अब भी जीवित हैं, परन्तु राजनीतिक आन्दोलनों, भौतिकवादी संस्थाओं तथा अपनी जाति एवं राष्ट्र के प्रति स्वार्थ-युक्त भावनाओं ने गर्द गुबार का एक ऐसा तूफ़ान खड़ा कर दिया है कि यह उज्ज्वल तथ्य उनके ओट में ओझल हो गए है। लेकिन मानवीय अंतरात्मा अभी निर्जीव तथा मानुषिक बुद्धि लुंज, निलम्बित एवं अनुलंबित नहीं हुई है। यदि पूर्ण निस्वार्थता, अटल विश्वास एवं विशुद्ध हार्दिक लगन के साथ इन वास्तविकताओं एवं तथ्यों को सामान्य तथा सरल भाषा और हृदयंगम शैली में प्रस्तुत किया जाय तो यह मानवी बुद्धि एवं अंतरात्मा अपना कार्य करने लगती है और बड़े उल्लास एवं उत्साह से इन तथ्यों का स्वागत करती है और कभी तो ऐसा विदित होता है कि इन व्याख्यानों में उसके हृदय की पुकार और उसके दर्द का मदावा है।

www.abulhasanalinadwi.org

सन् १९५४-५५ में लखनऊ की "जमाअत दावत-व-इस्लाह" का नित्य कार्य था कि वह देश का भ्रमण करती थी और विभिन्न स्थानों पर ऐसी सभाओं का आयोजन करती थी जिनमें विभिन्न धर्म, सम्प्रदाय एवं विचार धारा के लोग और हिन्दू, मुस्लिम तथा ईसाई बड़ी संख्या में सम्मिलित होते थे। जमाअत (संस्था) के व्याख्यान दाता इन सभाओं में उन तथ्यों को सरल तथा आम बोलचाल की भाषा में और नित्य, प्रतिदिन की घटनाओं एवं उदाहरणों द्वारा बुद्धिगम्य करने का प्रयास करते थे और यह बताते थे कि हमारी संस्कृति तथा जीवन में आधारभूत त्रुटियां एवं कमजोरियां क्या हैं, और हम से जीवन की समस्याओं एवं जटिलताओं पर विवेचना करने तथा विचार करने और फिर उनका समाधान करने के प्रयत्न में क्या भूल तथा चूक हो रही है। आधुनिक भौतिक एवं लौकिक सभ्यता में क्या त्रुटि एवं दोष हैं, जो वह नित्य नई-नई उलझनें उत्पन्न कर रही है और सामग्री तथा साधन के बाहुल्य होने पर भी मानवता को वास्तविक शान्ति प्रदान करने, संसार में शान्ति स्थापित करने और यथोचित उद्देश्यों के लिये प्रयास एवं परिश्रम करने में नितान्त असमर्थ है। जीवन का सही दृष्टिकोण और मनुष्य का वास्तविक स्थान क्या है, इस बारे में खुदा के पैग़म्बर हमारा क्या मार्ग-दर्शन करते हैं और जीवन का कौन सा नवीन दृष्टिकोण, नया भाव तथा नई कार्य-शक्ति प्रदान करते हैं?

अनुभव द्वारा ज्ञात हुआ कि यह समय की विशिष्ट आवश्यकता थी। यह सभायें हम सब की आशा एवं अनुमान से कहीं अधिक सफल एवं उपयोगी सिद्ध हुईं। इन में सहस्त्रों सभ्य एवं शिक्षित नागरिकों का सहयोग प्राप्त हुआ, जिन्होंने शान्ति, संतोष तथा रुचि-पूर्वक व्याख्यान सुने, जिस पर राजनीतिक कार्यकर्ताओं को आश्चर्य हुआ। फिर प्रतिष्ठित श्रोताओं ने अपने भावों को इस ढंग से व्यक्त किया जिससे कार्य तथा आवाहन का एक नवीनतम क्षेत्र सामने आ गया और विदित हुआ कि हमारे देश में तथ्यों एवं वास्तविकताओं के समझने की कितनी क्षमता एवं

www.abulhasanalinadwi.org

योग्यता पाई जाती है, और स्वार्थ पूर्ण राष्ट्रीय एवं राजनीतिक आन्दोलनों ने सर्वसाधारण को कितना निराश कर दिया है, और यह कि अन्धे एवं निर्जीव भौतिकवाद के विरुद्ध किस प्रकार के भाव और कैसी विकलता पाई जाती है। यह इस देश तथा इस युग के लिये एक शुभ शकुन और आशा की किरण है !

इस सिलसिले के पाँच व्याख्यानों का संग्रह (जो सन् १९५४ में हुए थे) "प्याम-ए-इन्सानियत" के नाम से प्रकाशित हो चुका है। इस समय दूसरी पाँच तक़रीरों (भाषणों) का संग्रह "मक़ाम-ए-इन्सानियत[1]" के नाम से प्रकाशित किया जा रहा है। इसमें एक व्याख्यान "नफ्स परस्ती अथवा खुदा परस्ती" सन् १९५४, का है शेष चार व्याख्यान सन् १९५५ के हैं।

आशा है कि यह व्याख्यान भी जो लिखित रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, रुचि एवं अभिरुचि तथा ध्यान एवं गम्भीरतापूर्वक पढ़े जायेंगे, और जिन चेतनाओं एवं अनुभूतियों को इनमें उभारा तथा जिन तथ्यों को इनमें व्यक्त किया गया है, वह अवश्य ही हितकर सिद्ध होंगे।

—अबुल हसन अली

---

१. जिसका हिन्दी रूपान्तर "मानवता का स्तर" आपके हाथ में है। (अनु०)

www.abulhasanalinadwi.org

www.abulhasanalinadwi.org

जीवन में व्यक्ति का महत्व

हमारे सुधारात्मक कार्यों में एक बहुत बड़ा रिक्त स्थान

२१, फरवरी सन् १९५५ ई० को जौनपुर टाउन हाल में हिन्दू मुसलमानों की एक संयुक्त सभा में यह व्याख्यान दिया गया।

www.abulhasanalinadwi.org

मित्रो तथा भाइयो !

सब जानते हैं कि हमारे समाज और वर्तमान जीवन व्यवस्था में कोई त्रुटि एवं कमी अवश्य है जिसके कारण जीवन की कल सही नहीं बैठती और उसका झोल दूर नहीं होता। एक खराबी को दूर कीजिये तो चार ख़राबियां और पैदा हो जाती हैं। आज संसार के बड़े-बड़े देश भी इस त्रुटि के अपवादक हैं और अनुभूत करने लगे हैं कि आधार में कोई त्रुटि है, किन्तु उनको अपनी फुटकर समस्याओं से छुट्टी नहीं। हम इन समस्याओं की आवश्यकताओं से इन्कार नहीं करते, मगर इन समस्त समस्याओं से अधिक महत्वपूर्ण तथा सर्वमान्य प्रश्न मानवता एवं मनुष्यता की समस्या है। इस लिये कि हमारी पहली स्थिति इन्सान ही की है और यह समस्त विषय उसके पश्चात् आते हैं। जिन लोगों के हाथों में जिन्दिगी की बागडोर है उन्होंने जीवन की गाड़ी इतनी तीव्र गति से चला रखी है कि एक मिनट के लिये उसको रोक कर त्रुटि एवं दोष को देखने के लिये भी तैयार नहीं। वह यह नहीं देखते कि गाड़ी ठीक पटरी पर जा रही है या नहीं और इस दोष से उसके यात्रियों तथा भविष्य में आने वाली पीढ़ियों तथा सन्तानों को किन भयंकर आशंकाओं तथा आपत्तियों का सामना करना है। उनको केवल इस बात की चिन्ता है कि इस गाड़ी को चलाने वाले वह हों। उनमें से प्रत्येक, संसार को इस बात की रिशवत देता है कि यदि गाड़ी का हैन्डिल उसके हाथ में होगा तो वह अधिक से अधिक तीव्र गति से गाड़ी चलायेगा। अमेरिका तथा रूस दोनों ही का दावा

www.abulhasanalinadwi.org

है कि वह इस गाड़ी को अत्यधिक तीव्र गति से चलायेंगे परन्तु किसी को भी इस यात्रा की दिशा और उद्देश्य से कोई बहस नहीं।

सामाजिकता की प्रवृत्ति

अब मैं बतलाता हूँ कि वह त्रुटि कहा और कैसे हो रही है। आज संसार में बड़े-बड़े संगठन हो रहे हैं। इस समय सामाजिकता पर अधिक बल दिया जा रहा है। हर काम सामूहिक तथा विश्वव्यापी स्तर पर किया जा रहा। यह सामाजिकता एक रुचिकार एवं प्रगतिवादी विचारधारा है, परन्तु व्यक्ति तथा उसकी योग्यता एवं क्षमता हर सामूहिक कार्य की और प्रत्येक संगठन की आधारशिला है और इसके महत्व से किसी भी युग में इन्कार नहीं किया जा सकता। इस युग का भयंकर दोष यह है कि व्यक्ति के महत्व तथा उसके आचरण एवं योग्यता की नितान्त उपेक्षा की जा रही है। भवन निर्माण हो रहा है किन्तु जिन ईटों से वह बनेगा उनको कोई नहीं देखता। यदि कोई इस प्रश्न को छेड़ता है कि ईंटें कैसी है, तो कहा जाता है कि ईंटें दोष युक्त, अपूर्ण तथा क्षीण भले हों किन्तु भवन सुदृढ़ एवं उत्तम होगा। मेरी समझ में नहीं आता कि सौ दोष युक्त वस्तुओं से एक उत्तम बस्तु कसे तैयार हो जायगी। क्या अनेक दोष जब बड़ी संख्या में एकत्र हो कर एक दूसरे में समन्वित हो जाते हैं तो चमत्कार के रूप में एक सुन्दर एवं उत्तम वस्तु प्रकट हो जाती है? क्या सौ अपराधियों एवं अत्याचारियों के संगठित

www.abulhasanalinadwi.org

हो जाने से एक न्याय युक्त दल तथा एक भद्र एवं शीलवान संस्था की स्थापना सम्भव है ? हमें तो यह ज्ञात है कि परिणाम सदैव प्राथमिक ज्ञान तथा मौलिक विचारों के अधीन होता है और पूर्ण सदा अंशो की विशेषताओं की प्रतिमा एवं प्रदर्शन मात्र होता है। आप यथोचित योगफल ज्ञात करना चाहते हैं तो जब तक आंकड़े शुद्ध न होंगे, प्रतिफल अशुद्ध रहेगा। यह कहां का तर्क एवं कहां का दर्शन है कि व्यक्तियों के निर्माण की कोई चिन्ता नहीं और एक सुन्दर एवं शोभनीय संग्रह एवं संगठन की आशाएं की जा रही है ?

दोषमुक्त असावधानी

आज विद्यालयों, अनुसंधान—शालाओं, प्रयोगशालाओं, क्रीड़ा स्थलों में मानव जीवन की प्रत्येक वास्तविक तथा कल्पित आवश्यकताओं की व्यवस्था की जा रही है किन्तु उन व्यक्तियों को बनाने के प्रबन्ध के प्रति कोई विचार नहीं किया जा रहा है, जिनके लिये यह ममस्त प्रयोजन हैं। क्या यह सब तैयारियां उन मनुष्यों के लिये हैं, जो साँप विच्छू बन कर जीवन व्यतीत करेंगे, जिनका उद्देश्य भोग विलास, लोलुपता एवं आमोद प्रमोद के सिवा कुछ नहीं ? इस युग के मानव ने जुल्म, अत्याचार एवं भ्रष्टाचार को संगठित किया है और इस विषय में उसने पशुओं को भी मात कर दिया है। क्या कभी साँपों तथा बिच्छुओं और जंगल के शेरों तथा भेड़ियों ने इन्सानों पर एकता करके संगठित रूप से आक्रमणा किया है ? लेकिन

www.abulhasanalinadwi.org

मनुष्य अपने जैसे मनुष्यों को मिटाने तथा बरबाद करने के लिये संगठनों एवं संस्थाओं को स्थापित करता है और पूर्णरूपेण विश्व से विनष्ट करने के लिये अनेक प्रकार की योजनाएँ बनाता है। इस समय व्यक्ति के प्रशिक्षण, चरित्र निर्माण और मानवता के गुणों तथा आचार, व्यवहार पैदा करने की भयंकर एवं दोषयुक्त उपेक्षा की जा रही है, यही काम सबसे निरर्थक एवं व्यर्थ समझा गया है। मशीन ढालने की कितनी फैक्टरियां है, कागज बनाने के कितने कारखाने है, कपड़े की कितनी मिले हैं, किन्तु वास्तविक मनुष्य बनाने की भी कोई संस्था अथवा प्रशिक्षण केन्द्र है ? आप कहेंगे कि यह शिक्षण संस्थाएं, विद्यालय तथा विश्व विद्यालय—लेकिनक्षमा कीजियेगा, वहां मानवता का निर्माण तथा मनुष्य को सही अर्थों में मनुष्य बनाने की ओर कितना ध्यान दिया जाता है ? यूरोप तथा अमेरिका ने कितना धन व्यय करके और कितनी सामग्री तथा उपकरणों का उपयोग करके ऐटम बम बनाया, यदि इसके स्थान पर वह एक आदर्श पुरुष तैयार करते तो विश्व के लिये कितना मंगलमय एवं कल्याणकारी होता, किन्तु इस ओर ध्यान देने की किस को फ़ुर्सत है।

हमारे प्रमाद का परिणाम

हमारा देश-भारत वर्ष इतिहास में, पुरुषोत्पादक देश माना गया है। इस धरती ने अनेक महान भावों को जन्म दिया है, किन्तु अब शताब्दियों से इसकी ओर से असावधानी बरती जा रही है। हमें कहना पड़ता है कि मुसलमानो ने स्वयं अपने शासन काल में इस कर्त्तव्य का पालन करने में न्यूनता एवं संकीर्णता से काम

www.abulhasanalinadwi.org

लिया। उनका शासन यदि ख़िलाफ़त राशिदा (हज़रत मुहम्मद सल्लाहु अलैहि व सल्लम के चार उत्तराधिकारियों का शासन काल) का आदर्श मात्र होता और वह इस देश के व्यवस्थापक एवं शासक होते और इस देश के अभिभावक तथा नैतिकता एवं चरित्र का निर्माण करने वाले होते तो आज इस देश का नैतिक स्तर यह न होता और इस देश के अधिपत्ति एवं शासन से भारयुक्त न किये जाते। फिर अंग्रेज आये। उनका शासन तो केवल स्पंज (SPONGE) के समान जिसका काम यह था कि गंगा के मुख से धन दौलत चूस कर टेम्स (TAMES) के तट पर उगल दे। उनके शासन काल में इस देश का नैतिक पतन कहीं से कहीं पहुच गया। अब हमें स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। हमें चाहिये था कि हम सर्व प्रथम इस मौलिक एवं आधारभूत समस्या की ओर ध्यान देते! क्या यह देश कभी स्वतन्त्र नहीं था? फिर वह स्वतन्त्रता की माया से क्यों वंचित हो गया? नैतिक पतन तथा नैतिक निर्बलता के कारण! किन्तु खेद है कि मार्गो एवं प्रकाश के प्रति जितना ध्यान दिया जाता है, उतना भी ध्यान इस मौलिक विषय की ओर नहीं है।

प्रत्येक सुधारात्मक कार्य का आधार।

मैं "श्रमदान" तथा "भूदान" आन्दोलनों को अति उदारता की दृष्टि से देखता हूँ, परन्तु मैं इस आस्था को नहीं छिपा सकता कि इससे भी पहले करने का काम नैतिक सुधार तथा उचित अनुभूति एवं चेतना का उत्पन्न करना था। हमें इतिहास से पता चलता है कि प्राचीन युग में भूमि का उचित रूप से

www.abulhasanalinadwi.org

बटवारा किया जाता था और अनेक युग तो ऐसे बीते हैं कि वायु एवं जल के समान भूमि को भी एक आवश्यक तत्व एवं मनुष्य का मौलिक अधिकार समझा जाता था। परन्तु तत्पश्चात् मनुष्यों के लोभ एवं लोलुपता ने पीड़ितों को भूमिहीन तथा अनावयशक व्यक्तितों को स्वामी बना दिया। यदि नैतिक अनुभूति और मानवता का सम्मान न उत्पन्न हुआ तो फिर इसी की आशंका है कि वितरित की हुई भूमि पर फिर जधिकार जमा लिया जायेगा अतः और जरूरतमन्दों को अधिकार से वंचित कर दिया जायेगा। जब तक यह चेतना उत्पन्न न हो और अन्तरात्मा जागरूक न हो, उस समय तक इन प्रयासों के परिणामों तथा वचनों पर भरोसा नहीं किया जा सकता। आज नैतिक पतन इस सीमा तक पहुँचा हुआ है कि घूस ख़ोरी, चोरबाज़ारी, ग़बन तथा विश्वासघात में कमी नहीं, अपितु लोगों का कहना है कि कुछ अधिकता ही है। धनी बनने की आकांक्षा एवं अभिलाषा उन्माद (जुनून) की सीमा तक पहुंच गई है। उत्तरदायित्व की अनुभूति का अभाव है। मनोद्देशा यह कि एक दूसरे की नेकी की आड़ लेकर बदी करना चाहता है। जब सब की यह दशा हो जावे तो वह सदाचार फिर कहां से आयेगा जिसकी आड़ में और जिसके आँचल में दुष्टता छिप सके। मेरे एक मिस्री मित्र ने अपने एक व्याख्यान में इसका एक बड़ा अच्छा उदाहरण दिया। उन्होंने कहा कि एक राजा ने एक रात्रि में यह घोषणा की कि एक हौज़ दूध का भरा हुआ चाहिये। प्रत्येक व्यक्ति एक घड़ा दूध इसमें डाल दे और प्रातः अपने दाम ले ले। अन्धेरी रात्रि थी, प्रत्येक व्यक्ति ने यह विचार किया कि मैंने यदि एक

www.abulhasanalinadwi.org

घड़ा जल इसमें डाल दिया तो इतने बड़े हौज़ में क्या पता चलेगा। सब लोग तो दूध डालेंगे ही। परन्तु संयोगवश हर एक ने यही सोचा और दूसरे के सदाचार एवं सत्यनिष्ठा के विश्वास पर विश्वासघात करना चाहा। परिणाम स्वरूप प्रातः जब राजा ने देखा तो पूरा हौज़ पानी से भरा था, दूध का चिह्न मात्र न था। जब किसी बस्ती की यह दशा हो जाय तो फिर उसकी कोई सुरक्षा नहीं कर सकता।

वास्तविक आशंका

याद रखिये इस देश के लिये कोई बाह्य आशंका अथवा भय नहीं है। इस देश के लिये भयंकर आशंका यह नैतिक पतन, यह अपराधी मनोवृत्ति, यह धन सम्पत्ति की होड़ तथा अपने स्वार्थ हेतु अपने भाई का गला काटने की प्रवृत्ति है। क्या यूनान तथा रोम (अपने समय के उन्नतिशील देश) को किसी बाहरी शत्रु ने तबाह किया—नहीं, वरन् उन्हे नैतिक रोग जिनका घुन उनको लग गया था। फिर इस समय एक देश का नैतिक पतन समस्त संसार के लिये ख़तरा है। संसार जब ही सुख एवं शान्ति का जीवन व्यतीत कर सकता है, जब संसार का प्रत्येक देश सुखी और उसकी शासन व्यवस्था सुदृढ़ हो।

पैगम्बरों का कारनामा (ईश दूतों की कृति)

पैग़म्बरों का यही कारनामा है कि उन्होंने सुचरित्र एवं सदाचारी व्यक्ति तैयार किये। ईश्वर के भक्त तथा उससे डरने वाले, मानव से प्रेम करने वाले, दूसरे के दुःख को समेटने वाले,

www.abulhasanalinadwi.org

अपने पराये में न्याय करने वाले, सत्य बोलने तथा सत्य का साथ देने वाले, उत्पीड़ितों को सहयोग देने वाले। संसार के किसी व्यक्ति, किसी संस्था अथवा किसी प्रशिक्षणालय ने ऐसे चरित्रवान व्यक्ति तैयार नहीं किये। विश्व को अपने आविष्कारों पर अभिमान है, वैज्ञानिकों को अपनी सेवाओं पर गर्व है, परन्तु पैग़म्बरों से बढ़ कर किसने मानवता की सेवा की, उनसे अधिक बहुमूल्य वस्तु किसने संसार को प्रदान की। उन व्यक्तियों ने संसार को गुलज़ार बना दिया, उन्हीं के कारण संसार की प्रत्येक वस्तु उपयोगी बन गई और हर सम्पत्ति ठिकाने लगी। आज भी संसार में जो सदाचारी प्रवृत्ति, जो सत्य एवं न्याय और मानवता के प्रति प्रेम पाया जाता है, वह उन्हीं पैगम्बरों के प्रयासों, प्रयत्नों तथा प्रचार का परिणाम है। यह आधुनिक संसार भी केवल आविष्कारों तथा साँस्कृतिक प्रगति के बल पर नहीं चल रहा है, यह केवल उस सच्चाई, सत्य-निष्ठा, न्याय एवं प्रेम पर आधारित है जो पैग़म्बर उत्पन्न कर गए।

पैगम्बरों की कार्य विधि

पैग़म्बरों ने चरित्रवान् तथा सदाचारी व्यक्ति किस प्रकार पदा किये, यह बात कुछ कम आश्चर्यजनक नहीं है। उन्होंने उनके अन्दर एक नवीन विश्वास की ज्योति जागृत की जिससे समस्त ससार उस समय वंचित था, जिसके अभाव ने समस्त साँसारिक व्यवस्था को अस्त-व्यस्त कर रक्खा था और मानव इसको खो कर दानव, एक हिंसक तथा लोभी पशु बन गया था अर्थात् ईश्वर के अस्तित्व का विश्वास और मृत्यु पश्चात् जीवन

www.abulhasanalinadwi.org

तथा उत्तरदायित्व का विश्वास और इस बात का विश्वास कि यह सत्य पुरुष ईश्वर का संदेश लाने वाले और मानव जाति का यथार्थ मार्ग दर्शन करने वाले हैं। इस विश्वास ने मनुष्य की काया पलट की और उसको एक बेलगाम पशु से एक उत्तरदायी इन्सान बना दिया।

इतिहास का अनुभव

सहस्रों वर्ष का अनुभव बताता है कि मनुष्य निर्माण हेतु कोई बड़ी शक्ति नहीं। आज संसार का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि विभिन्न प्रकार के दल हैं, जातियाँ हैं, संगठन तथा संस्थायें विद्यमान हैं परन्तु सदाचारी व्यक्ति दुर्लभ हैं और विश्व के बाजार में इसी तत्व का अभाव है, मानो व्यक्ति नाम की वस्तु का अकाल है। आशंकापूर्ण बात यह है कि उनकी तैयारी की लेश मात्र चिन्ता नहीं है और सच पूछिये तो यदि निर्माण हेतु प्रयास भी किया जाता है तो उसके लिये उचित मार्ग नहीं अपनाया जाता। इसका एक मात्र रास्ता है और वह यह है कि यह विश्वास फिर उत्पन्न किया जाए और सबसे पहले इन्सान को इन्सान बनाया जाए। इसके बिना अपराध बन्द नहीं हो सकते, दोष दूर नहीं हो सकते। आप एक चोर दरवाजा बन्द करेंगे, दस चोर दरवाजे खुल जायेंगे। खेद है कि जिनको इस मौलिक कार्य करने की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है और जिनके ध्यान देने से प्रभाव पड़ सकता है उनको अन्य समस्याओं से फुर्सत नहीं। यदि वह इस विषय की ओर आकृष्ट होते तो इससे समस्त जीवन पर प्रभाव पड़ता और सैकड़ों समस्यायें

www.abulhasanalinadwi.org

इससे हल हो जातीं, जिस पर प्रथक रूप से प्रयत्न किये जा रहे हैं और सन्तोषजनक निष्कर्ष नहीं निकलता ।

हमारे प्रयास एवं परिश्रम का प्रेरक

हमने जब देखा कि इतने लम्बे चौड़े देश में कोई आवाज उठाने वाला नहीं और कोई इसको अपने जीवन का उद्देश्य और अभिमान का रूप प्रदान करने वाला नहीं तो हम और हमारे कुछ साथी इस आवाहन हेतु अपने घर से निकले, हम आपके नगर में आये, आपने हमें मान्यता प्रदान की और रुचि एवं शान्ति पूर्वक हमारी बात सुनी, इसके लिये हम आपके आभारी हैं और इससे हमें प्रोत्साहन मिलता है, हम इसी आशा पर निकले हैं कि मनुष्यों की इस विस्तृत नगरी में अवश्य कुछ उत्साहयुक्त व्यक्ति पाये जाते हैं । संसार का प्रत्येक कार्य इन्हीं व्यक्तियों के अस्तित्व एवं विश्वास और उन्हीं के साहसपूर्ण एवं उत्साह की आस्था पर किया गया है । हम इस बात की भी आशा करते हैं कि वह अपने को ऐसा व्यक्ति बनाने का प्रयास करेंगे जिसकी आज दुनिया को आवश्यकता है और जिसके बिना इस ज़िन्दगी की चूल बैठ नहीं सकती ।

www.abulhasanalinadwi.org

एक पवित्र ट्रस्ट तथा उसका ट्रस्टी

वंथरा रोड की एक संयुक्त सभा का, जिसमें
हिन्दू मुस्लिम सज्जनों की एक बड़ी संख्या
उपस्थित थी, एक महत्वपूर्ण व्याख्यान

www.abulhasanalinadwi.org

रिवाजी सम्मेलन

मित्रो एवं भाइयों ! इस समय हमारे देश में सम्मेलनों तथा समारोहों का बहुत रिवाज है। परन्तु यह सम्मेलन तथा समारोह दो प्रकार के होते हैं। एक वह जो बिल्कुल व्यक्तिगत स्वार्थ एवं उद्देश्य हेतु आयोजित किये जाते हैं। चाहे उसके पीछे कोई संस्था अथवा राजनीतिक दल कार्य करता हो या किसी संस्था एवं दल का नाम लिया जाता हो। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण चुनाव के समारोह हैं, एलेक्शन की बदौलत नगर-नगर, गाँव-गाँव जलसे होते हैं और उनके लिये कठोर परिश्रम किया जाता है, समय नष्ट किया जाता है और धन पानी के समान बहाया जाता है। जो लोग किसी क्षेत्र से निर्वाचन हेतु खड़े होते हैं वह मतदाताओं को विश्वास दिलाते हैं कि वह निर्वाचन हेतु अति उपयुक्त एवं योग्य उम्मीदवार है। इन सभाओं में जीवन के सिद्धान्त, नैतिकता एवं योग्य नागरिक बनने की शिक्षा नहीं दी जाती। उनकी रुचि केवल इसमें होती है कि उनको अधिक से अधिक वोट मिल जाये। उनके निकट वही लोग प्रशंसनीय हैं तथा उन्हीं के अस्तित्व का मूल्य है जो उनका समर्थन करें और उनको वोट दें, चाहे वह नैतिक दृष्टिकोण से कितने ही गिरे हुए हों, चरित्र एवं आचरण की दृष्टि से तुच्छ एवं हीन व्यक्ति हों।

दूसरी प्रकार की वह सभायें होती हैं जो धार्मिक रीतियों अथवा सामाजिक उत्सवों के सम्बन्ध में आयोजित की जाती हैं। इस प्रकार की सभायें मुसलमानों में भी होती हैं और हिन्दुओं में भी, परन्तु खेद की बात है कि धार्मिक सभायें जो कभी

www.abulhasanalinadwi.org

जातियों में जीवन की एक लहर उत्पन्न करने का साधन होती थीं और सुधार एवं परिवर्तन का सन्देश देती थीं, अब कोई सन्देश तथा प्रोग्राम (Programme) नहीं रखतीं। इसी प्रकार वे सामाजिक उत्सव जिनके द्वारा सुधार एवं सामाजिकता का कार्य लिया जाता था, एक प्रकार से नीरस तथा निर्जीव हो गए हैं और एक लगे बंधे प्रोग्राम के अन्तर्गत सम्पन्न होने लगे हैं।

प्रभावहीन सम्मेलन

इन सम्मेलनों तथा सभाओं में लोग जो विचार लेकर आते हैं, वही विचार लेकर जाते हैं। उनमें कोई सुधार एवं परिवर्तन नहीं होता, बल्कि उन सभाओं में सम्मिलित होने से एक प्रकार का आत्म संतोष उत्पन्न होता है। इनमें सम्मिलित होने वाला समझने लगता है कि सम्मिलित होने से वह हल्का और पवित्र हो गया और उसने जो पाप किये थे, वह धुल गए। आज धर्म से व्यक्तियों के मन एवं मस्तिष्क पर चोट नहीं लगती, धार्मिक सभाओं में सम्मिलित होने से शान्ति एवं संतुष्टि में अभिवृद्धि हो जाती है।

धर्म अशुद्ध एवं असत्य जीवन का प्रतिद्वन्द्वी है

यद्यपि धर्म असत्य जीवन का विरोधी है। उसका समझौता विकृतियों, पापों तथा दुर्व्यवहारों से असम्भव है। पहले भाँति-भाँति का जीवन व्यतीत करने वाले इन सभाओं से कतराते तथा आना कानी करते थे कि कहीं धर्म उनकी गतिविधियों की आलोचना न करे। कुरआन मजीद में हजरत शुऐब (अलैहि-

www.abulhasanalinadwi.org

स्सलाम) और उनकी जाति के बीच हुए वार्तालाप का वर्णन किया गया है। हज़रत शुऐब (अलैहिस्सलाम) ने अपनी जाति से कहा—ऐ लोगों नाप तौल में कमी न करो, तुम डन्डी मारते हो और कम तौलते हो, ग्राहक से अधिक से अधिक लेने की ताक में लगे रहते हो और उसको कम से कम देने का प्रयत्न करते हो, यह महा पाप है। क़ौम ने उत्तर दिया कि क्या तुम्हारी नमाज़ तुमको इस बात की शिक्षा देती है कि तुम हमारे इस आचार व्यवहार पर आक्षेप करो और हमको अपने व्यापार में स्वतन्त्रतापूर्वक कार्यवाही करने से रोको? जाति ने सही अनुमान लगाया। यह समस्त प्रतिबन्ध नमाज़ ही लगाती है और जीवन में सत्य-असत्य, उचित-अनुचित, शुद्ध-अशुद्ध का भेद बताती है। एक सत्य एवं जीवित धर्म जीवन में मिथ्या, अशुद्ध, असत्य एवं पाप के प्रति मौन धारण नहीं कर सकता।

भाईयो! हमारी यह सभा नितान्त नवीन रूप की है। यह कोई एलेक्शन की सभाओं में से नहीं है, न धार्मिक समारोहों में से कोई समारोह है। हम इस सभा में यह बताने का प्रयास करेंगे कि जीवन का सही मार्ग क्या है? और मनुष्य पतन की ओर क्यों अग्रसरित है?

सबसे आवश्यक प्रश्न

आप जब कोई काम करते हैं तो सबसे पहले इस बात का निश्चय करते हैं कि इसका उद्देश्य क्या है और इस सम्बन्ध में आपका उचित स्थान क्या है? दुनिया में जो कुछ हो रहा है

www.abulhasanalinadwi.org

उसकी तह में यह आधारभूत तथ्य कार्य कर रहा है कि मनुष्य ने संसार में अपने को क्या समझा और उसको क्या स्थान प्राप्त है ? यदि इसी बात का शुद्ध ज्ञान हो गया तो प्रत्येक कार्य ठीक होगा और अगर इसी स्थान पर भूल हो गई तो यह भूल होती ही चली जायेगी।

मनुष्य ईश्वर का प्रतिनिधि है

मित्रो ! इस्लाम ने हमें बताया है कि इन्सान दुनियां में खुदा का नायब, ख़लीफ़ा और दुनिया का ट्रस्टी (Trustee) है। संसार एक वक्फ़ है और मनुष्य उसका प्रवन्धक। उसका दायित्व यहाँ का प्रबन्ध का काम है। संसार में छोटे बड़े बहुत से वक्फ़ (धर्मार्थ दान) होते हैं। यह समस्त संसार, यह सारा जगत् एक महान् वक्फ (Trust) है। यह किसी की व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं, या किसी के बाप दादा की जागीर नहीं कि जिस प्रकार चाहे खाय उड़ाए। इस ट्रस्ट में पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, नदी-पर्वत, सोना-चाँदी, खाद्य पदार्थ और अनेक प्रकार की साँसारिक सामग्री विद्यमान हैं। यह सब मनुष्य को समर्पित की गई हैं, क्योंकि वह उनके स्वभाव एवं गुणों से अवगत है और वह उनके प्रति सहानुभूति रखने वाला भी। मनुष्य स्वयं इस ट्रस्ट की मिट्टी से बना है और इसी धूलि का है और प्रवन्धक एवं व्यवस्थापक के लिये जानकारी तथा ज्ञान और सहानुभूति एवं सम्बन्ध दोनों अनिवार्य हैं। मनुष्य संसार के लाभ तथा हानि से भी अवगत है और उसके अन्दर उसकी आवश्यकतायें भी रक्खी गई हैं, अतः वह अच्छा ट्रस्टी बन सकता है।

www.abulhasanalinadwi.org

उदाहरणार्थ किसी पुस्तकालय का व्यवस्थापन कार्य वही भली प्रकार कर सकता है जिसको विद्या से प्रेम हो और पुस्तकों से लगाव तथा रुचि हो। यदि किसी पुस्तकालय का प्रबन्ध किसी अज्ञानी तथा अपढ़ के हाथो में दे दिया गया, भले ही वह सज्जन तथा सुशील व्यक्ति हो, वह अच्छा लाईब्रेरियन (Librarian) नहीं बन सकता। परन्तु जिसको विद्या से प्रेम होगा और पुस्तकों के प्रति रुचि, वह इसमें पर्याप्त समय व्यय करेगा, पुस्तकों की संख्या में उचित अभिवृद्धि करेगा और उसका विकास करेगा।

इसी प्रकार मनुष्य चूंकि इसी संसार का है, उसको इससे रुचि भी है और वह इसका आश्रित भी है, इससे परिचित भी है और इसके प्रति सहानुभूति रखने वाला भी। उसको इसी में रहना भी है और मरना भी। अतः वह इसकी पूरी देख भाल करेगा और ईश्वर द्वारा प्रदत्त सुख सामग्री को ठिकाने लगायेगा भी। यह कार्य उसके अतिरिक्त और कोई सुयोग्यपूर्ण कार्यान्वित नहीं कर सकता।

संसार के प्रबन्ध हेतु मनुष्य ही उचित है

जब हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) को खुदा ने पैदा किया और पृथ्वी पर अपना प्रतिनिधि बनाया। फरिश्ते जो पवित्र एवं पूर्णतया आत्मसम्बन्धी प्राणी हैं, जो न पाप करते हैं और न पाप करने की प्रवृत्ति रखते हैं, बोले कि हे स्वामी! आप ऐसे को अपना प्रतिनिधि बना रहे हैं जो दुनिया में रक्तपात करेगा। हम तेरी गुणगान करते हैं और निरन्तर तेरी उपासना में व्यस्त रहते हैं, यह उपाधि हमें प्रदान कीजिये। ईश्वर ने उत्तर

www.abulhasanalinadwi.org

दिया—तुम इस बात को नहीं जानते। खुदा ने आदम तथा फरिश्तों की परीक्षा ली। चूंकि आदम इसी धूलि के थे, उनको संसार का उपभोग करना था, उनके स्वभाव इसी के अनुकूल थे, अतः वह इसके एक-एक तत्त्व से परिचित थे, उन्होंने ठीक-ठीक उत्तर दिया। फरिश्तों को इन वस्तुओं से कोई सम्पर्क न था, अतः उत्तर न दे सके। इस प्रकार ईश्वर ने दिखा दिया कि संसार के प्रबन्ध तथा इस ट्रस्ट के अधिकारी होने के लिये, अपनी अनेक त्रुटियों तथा दोषयुक्त बातों के होते हुए भी, मनुष्य ही उपयुक्त है वरन् यह दोष तथा आवश्यकताएँ ही उसको इस उपाधि के योग्य सिद्ध करती हैं। यदि इस संसार में फरिश्ते होते तो दुनिया की अधिकांश सुखसामग्रियां व्यर्थ सिद्ध होतीं और उनका विकास एवं उन्नति कदापि न होती जो मनुष्य ने अपनी आवश्यकताओं एवं अभिलाषाओं की बिना पर की।

सफल प्रतिनिधि

परन्तु यह भी आपको याद रखना चाहिये कि नायब तथा प्रतिनिधि का परम कर्त्तव्य है कि प्रतिनिधि का पूर्णरूपेण अनुसरण करे। वह उसके आचार व्यवहार एवं चरित्र का आदर्श हो। यदि मैं यहाँ किसी का प्रतिनिधि हूँ तो सफल एवं आज्ञाकारी प्रतिनिधि उसी समय कहलाऊँगा जब अपने सामर्थ्य भर उसका अनुसरण करूँ और अपने अन्दर उसके आचार पैदा करूँ। ईश्वर का प्रतिनिधित्व यह है कि अपने अन्दर उसके आचार व्यवहार उत्पन्न किये जाएँ और उसके गुणों से सामंजस्य हो। हमें बताया गया है कि उसके गुणों तथा आचार व्यवहार में,

www.abulhasanalinadwi.org

ज्ञान, दया, करुणा एवं अनुकम्पा, कृतज्ञता, उपकार एवं अनुग्रह, प्रबन्ध, न्याय, संयम, क्षमा, कृपा, रक्षा एवं अनुग्रह, स्नेह एवं प्रेम, तेज एवं सौन्दर्य, अपराधियों की पकड़ एवं प्रतिशोध, विशालता एवं व्यापकता है।

ईश्वरीय आचरण एवं गुणों का द्योतक

खुदा के पैगम्बर मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मनुष्य को शिक्षा दी कि ईश्वरीय गुणों को अंगीकार करो। मनुष्य अपने सीमित मानवीय क्षेत्र में अपनी मानवीय दुर्बलताओं के अन्तर्गत इन ईश्वरीय आचरण एवं गुणों का प्रतिरूप अपने अन्दर पैदा कर सकता है। वह कभी खुदा नहीं हो सकता परन्तु संसार में ईश्वरीय आचार एवं गुणों का अपने सीमित क्षेत्र में प्रदर्शन कर सकता है और यही एक सच्चे प्रतिनिधि का कार्य है। आप अनुमान कर सकते हैं कि यदि मनुष्य वास्तविक रूप से अपने को ईश्वर का प्रतिनिधि समझने लगे और ईश्वरीय गुणों को अपने जीवन का आदर्श बनाए तो स्वयं उसकी उन्नति एवं प्रगति तथा श्रेष्ठता एवं उत्तमता और इन गुणों से ओत-प्रोत शासन काल, इस संसार की शान्ति एवं सम्पन्नता की क्या दशा होगी? धर्म मनुष्य को उत्तम, उच्चतम एवं अति संतुलित कल्पना प्रदान करता है। धर्म, मनुष्य को ईश्वर की प्रतिमूर्ति और संसार की व्यवस्था एवं प्रबन्ध के प्रति उस का प्रतिनिधि और इस विशाल ट्रस्ट (Trust) का उसको ट्रस्टी (Trustee) का मान्य, प्रदान करता है। इससे बढ़ कर मानव जाति का मान एवं सम्मान और

www.abulhasanalinadwi.org

मानवता के उन्नयन एव पराकाष्ठा की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

दो नितान्त विपरीत एवं प्रतिकूल धारणायें

परन्तु मनुष्यों ने स्वयं दो परस्पर विरोधी धारणायें अपना रक्खी हैं। कहीं तो मनुष्य को भगवान बना दिया गया और उसकी उपासना की जाने लगी और कहीं उसे पशुओं से भी क्षीण, हीन समझ लिया गया और उसे गाय बैल, के समान हंकाया जाने लगा। कुछ तो स्वयं भगवान बन बैठे और कुछ अपने को पशुओं से हीन समझने लगे। वह समझते हैं कि हमें केवल पेट से काम है और केवल मन प्रदान किया गया है। यह दोनों धारणायें अशुद्ध एवं असत्य हैं अपितु अन्याय एवं अत्याचार है। न मनुष्य ईश्वर है, न पशु वरन् मनुष्य केवल मनुष्य और मनुष्य ही है, परन्तु ईश्वर का प्रतिनिधि। समस्त संसार उसके लिये पैदा किया गया है और वह खुदा के लिये। समस्त संसार उसके समक्ष उत्तरदायी है और वह खुदा के सामने। यह पृथ्वी, यह संसार किसी की व्यक्तिगत जागीर नहीं। एक ट्रस्ट है और मनुष्य उसका ट्रस्टी। इस आस्था और इस विश्वास के बिना दुनिया की चूल ठीक नहीं बैठ सकती। इतिहास साक्षी है कि जब मनुष्य इस मार्ग से विचलित हुआ और अपनी सीमा का उलंघन किया तथा ईश्वर बनने का प्रयत्न किया और अपने को संसार का वास्तविक स्वामी समझा अथवा अपने स्तर से नीचे गिरा और अपने को पशु समान समझा या संसार की व्यवस्था

www.abulhasanalinadwi.org

तथा प्रतिनिधित्व से विरक्त हुआ और जीवन के उत्तरदायित्व एवं कर्त्तव्यो से विरत हुआ तो स्वयं भी विनष्ट हुआ और यह संसार भी नष्ट हुआ।

मनुष्य की प्रकृतिवादी धारणा

आज यूरोप जिसके हाथ में दुनियां की बागडोर है और वह मानव जाति का नेता बना हुआ है, उसने पशुता के स्तर से भी आगे कदम बढ़ाया। उसने मानवता की प्रकृतिवादी धारणा प्रस्तुत की। वह कहता है कि मनुष्य रुपया ढालने की मशीन और एक सफल टकसाल है। अलबत्ता उसके अन्दर इच्छाएँ एवं आकाक्षाएँ हैं परन्तु नितान्त पाशविक। क्या अच्छा होता यदि वह हनुष्य को केवल एक मशीन ही रहने देता, जिसके अन्दर अपनी कोई कामना एवं आकांक्षा नहीं। कितना घोर अन्याय है कि वह मशीन भी है, स्वार्थी भी और मनुष्य विरोधी भी। यूरोप के इस नेतृत्व काल में समस्त संसार एक निर्जीव फैक्ट्री का रूप धारण करता जा रहा है, जिसमें कभी-कभी अति भयंकर टकराव हो जाते हैं। इस यांत्रिक युग में मृदुल मानवी भाव एवं चेतनाएं, मनुष्य से सहानुभूति तथा हृदय की कोमलता ढूँढ़ने से भी नहीं मिलती। इस टकसाल में कहीं ईश्वर का नाम नहीं, उसकी सत्य चाह एवं हृदय में दाह नहीं, न नेत्रों में सजलता, न हृदय में द्रवशीलता एवं ज्वलनता, न मानवता की मृदुता न हृदय एवं आत्मा की जागरूकता। यद्यपि जिस हृदय में प्रेम एवं ममता का निवास नहीं, वह मनुष्य का हृदय नहीं पत्थर की सिल है।

www.abulhasanalinadwi.org

जिन नेत्रों में कभी अश्रु न आएँ, वह मनुष्य के नेत्र नहीं नर्गिस के नयन हैं।

आर्थिक समस्या अथवा प्रमोद एवं विनोद

अब रुपया, पेट एवं स्वार्थ के अतिरिक्त कुछ नहीं। मैं अपने शहर में प्रातः टहलने निकलता हूँ तो विभिन्न दलों तथा मित्रों की टोलियों के पास से गुजरता हूं। इधर से दो आदमी गुजरे उधर से चार आदमी आये, परन्तु बरसों हसरत रही कि इन मुसलमान और हिन्दू भाईयों के मुख से कुछ और सुनूं, लेकिन सिवाय इसके और कुछ सुनने में नहीं आता कि आपका वेतन कितना है? आपकी ऊपरी आय क्या हो जाती है? आपका तबादला कहाँ हो रहा है, अमुक अधिकारी दुष्टस्वभाव का है, पुत्र के विवाह में इतना व्यय हुआ, पुत्री को इतना दहेज दिया, हमारा फण्ड इतना जमा है, अमुक का बैंक में इतना हिसाब है अब तो क्रिकेट का दौर दौरा है, हर जगह क्रिकेट की चर्चा, हर जगह खेलने वालों पर समालोचना। मैं खेल का विरोधी नहीं स्वयं भी खेला हूं और अभिरुचि रखता हूं, व्यायाम तथा मरदाना खेलों को उपयोगी एवं आवश्यक समझता हूं, किन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि यही जीवन का एक विषय बनकर रह जाय और सुबह से शाम तक इसकी चर्चा से फुर्सत न हो। आपने सुना होगा कि पाकिस्तान में एक सज्जन का इस बात पर हार्ट फेल हो गया कि एक खिलाड़ी ९९ रन बनाकर आउट हो गया और सेन्चुरी न बना सका। मैंने अपनी अनेक यात्राओं में देखा है कि

www.abulhasanalinadwi.org

दो-दो, तीन-तीन घण्टे तक निरन्तर क्रिकेट की टीम और उसके खेल पर चर्चा होती रही, एक मिनट के लिये भी विषय परिवर्तन नहीं हुआ। इन्सानों ! तुमने दुनिया को क्लब बनाया, टक्साल बनाया, कारखाना बनाया, युद्ध का क्षेत्र बनाया किन्तु आदमियों की बस्ती न बनाई।

हृदय की वास्तविक पिपासा

पहले हर गाँव, हर कस्बे में खुदा के ऐसे नेक बन्दे होते थे जिनसे हृदय की प्यास बुझती थी। जिस तरह जबान की प्यास होती है, इसी प्रकार हृदय की भी पिपासा होती है। जबान की प्यास पानी, शर्बत, सोडे तथा लेमन से बुझती है, हृदय की तृप्ति सच्ची एवं पवित्र प्रेम युक्त बातों तथा सत्य प्रिय की चर्चा से होती है। वह धन दौलत तथा मनोकामना की चर्चा से भड़कती है। आज प्रत्येक वस्तु की दुकानें हैं, मंडियाँ हैं, बाजार हैं, परन्तु दिल की दवा तथा आत्मा की गिज़ा दुर्लभ है, और कहने वाले पहले से कह रहे हैं :-

—"वह जो बेचते थे दवा-ए-दिल वह दुकान अपनी बढ़ा गए"। आज न घरों में ईश्वर की चर्चा है न रेलों में, यहां तक कि मस्जिदों तथा मन्दिरों में भी इस पर चिन्तन, मनन तथा शोच-विचार का अभाव होता जा रहा है। आज स्थान-स्थान पर भोग-विलास तथा आमोद-प्रमोद का हा-हाकार है, रही सही कमी यह सिनेमा पूरी कर देते हैं जो अमानुषिक भावनाओं को भड़काने में विशेष भाग लेते हैं। आत्मा व्याकुल है, ईश्वर का भक्त

www.abulhasanalinadwi.org

कहाँ जाय ? यदि धन जुटाना ही मनुष्य का प्रमुख कार्य है और उदरपूर्ति ही इसका कर्त्तव्य था, तो यह मृदुल एवं कोमल हृदय मनुष्य को क्यों दिया गया, मस्तिष्क क्यों प्रदान किया गया, ऐसी विकल तथा आकाश को भेदने वाली आत्मा तथा भाँति-भांति के विविध एवं चित्रविचित्र योग्यतायें क्यों प्रदत्त की गईं।

किसी को मानवता का दर्द नहीं

यूरोप ने मनुष्य को ईंधन समझ लिया। वह अपनी मान-मर्यादा एवं कामनाओं तथा आकांक्षाओं के अलाव में मनुष्यों को लकड़ी तथा कोयले की भांति डालता जा रहा है। अमेरिका की इच्छा है कि उत्तरी कोरिया तथा समाजवादी चीन को भेंट चढ़ा दे, रूस चाहता है कि नेशनलिस्ट चीन को विनष्ट कर दे। समस्त पाश्चात्यवादी शक्तियां चाहती हैं कि मध्य पूर्व (एशिया) युद्ध का क्षेत्र बन जाय, किसी को मानवता का दर्द नहीं, किसी के हृदय में मानवता का सम्मान नहीं। सब ईश्वरीय सम्पत्ति को हड़प कर जाना चाहते हैं, ईश्वर का प्रतिनिधि बनना नहीं चाहते। कोई इस पवित्र ट्रस्ट का ट्रस्टी होना नहीं चाहता।

एशिया तथा अफ़रीका में भी राज्यों का आधार सत्य मार्ग तथा मार्गदर्शन के सिद्धान्त, मानव जाति के कल्याण, नैतिक सुधार तथा मानवता की प्रगति पर नहीं, सबका आधार आर्थिक समस्याओं तथा आय के साधनों की उन्नति एवं अभिवृद्धि पर है। उनके निकट राष्ट्र की नैतिक दशा तथा मानवीय समस्या कोई महत्व नहीं रखती। इस के लिये कोई आर्थिक क्षति सहन

www.abulhasanalinadwi.org

करने के लिये तत्पर नहीं। यदि किसी दूषित संस्था या किसी विनोदमयी उद्योग से उसकी आय में वृद्धि होती है और राष्ट्र के किसी वर्ग अथवा नई पीढ़ी को इससे क्षति पहुंचती है, तो वह कदापि इस आय से निवृत्त होने के लिये तैयार नहीं, चाहे आगे आने वाली पीढ़ी सर्वथा नष्ट तथा नैतिक रूप से बिल्कुल बरबाद हो जाय।

स्वंय करने का कार्य

प्रेमियो तथा मित्रो! इस समय ईमान तथा इख़लाक़ (नैतिकता) और इन्सानियत की समस्या को न राज्यों पर छोड़ा जा सकता है, न संस्थाओं तथा शिक्षालयों पर। यह एक व्यापक तथा सार्वभौमिक समस्या है। इसके लिये हम सबको मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता है। याद रखिये, जिस कार्य को व्यक्ति तथा सर्वसाधारण करले के तैयार न हों और जिसके महत्व की अनुभूति जनता तथा जनसाधारण को न हो, कार्य कितना ही सहज तथा सरल हो, कार्यान्वित नहीं हो सकता और बड़े से बड़ा राज्य भी उसको पूरा नहीं कर सकता। इसके लिये जनतान्त्रिक तथा सार्वजनिक प्रयास की आवश्यकता है। पैग़म्बरों ने अपने व्यक्तिगत तथा जनसाधारण के प्रयत्नों से एक क्रान्ति उत्पन्न कर दिया। हम को तथा आप को उन्हीं के पदचिन्हों पर चल कर इसका प्रयास करना चाहिये, स्वंय अपना सुधार करना चाहिये और सामान्य जनता के सुधार हेतु पग उठाना चाहिये। इस का प्रयत्न किया जाय कि मनुष्य इस संसार को पवित्र ट्रस्ट तथा अपने को एक उत्तरदायी ट्रस्टी समझने लगे। वह अपने को

www.abulhasanalinadwi.org

इस संसार में ईश्वर का योग्य प्रतिनिधि सिद्ध करें और ईश्वरीय आचरण अपना कर ईश्वर की सृष्टि के साथ उसी प्रकार का व्यवहार करे एवं यही सुधार की पद्धति है और इसी में मानवता संसार की मुक्ति है।

www.abulhasanalinadwi.org

वर्तमान सभ्यता की असफलता

साधनों तथा उद्देश्यों का असंतुलन

२४, फरवरी, १९५५ को ७-३० बजे रात्रि में बनारस के विक्टोरिया पार्क में एक सार्वजनिक सभा को सम्बोधित करते हुए मौलाना स० अबुल हसन अली नदवी ने फ़रमाया—

www.abulhasanalinadwi.org

मुझे आप भाईयों से जो कुछ कहना है, उसके लिये मेरा आप से निवेदन है कि आप ध्यान तथा विचार पूर्वकसुनें। यदि आप का मन इसे स्वीकार करे तो इसको आप दूसरों तक भी पहुँचायें। हम और हमारे साथी तथा मित्र जन आप के नगर में आये। आप को यह पूछने का पूर्ण अधिकार है कि आप ने यह कष्ट क्यों किया और आप को कौन सी चेतना एवं अनुभूति यहाँ लाई ? आप ने तो यह अनुमान लगाया होगा कि कोई बात तो है कि यह क़ाफ़िला नगर-नगर भ्रमण कर रहा है। हम आप के समक्ष अपने दिल का दुःख दर्द प्रस्तुत करते हैं और आप को इस दर्द में सम्मिलित करना चाहते हैं।

साधनों की सुगमता तथा बाहुल्य

मित्रो तथा भाईयो ! आधुनिक काल अनेक दृष्टि-कोण से प्रमुख माना जा सकता है। कार्य करने के साधन जहां तक इस समय उपलब्ध हैं, उतने कदाचिप् कभी नहीं थे। मैं इतिहास का एक विद्यार्थी हूँ। मैं जानता हूं कि इतने साधन कभी मनुष्य के पास इससे पूर्व एकत्र नहीं हुए थे। साधनों का बाहुल्य इस युग की विशेषता है। साधन आज अधिक से अधिक और उत्तम से उत्तम हैं। हम लोग लखनऊ से कुछ ही घंटों में यात्रा पूर्ण करके पहुँच गये। इससे भी तीव्रगति की गाड़ी से भी यह यात्रा की जा सकती है। लोग हवाई जहाजों से भी यहां आ सकते हैं। आज से केवल सत्तर अस्सी वर्ष पूर्व लखनऊ से कोई बनारस आना चाहता तो आप सोचिये कि वह क्या साधन अपनाता और कितने समय में पहुँचता ?

www.abulhasanalinadwi.org

यह तो यात्रा करने की बात है। एक समय था कि आदमी अपने दूर स्थित मित्रों तथा सम्बन्धियों की ख़ैर ख़ैरियत मालूम करने को तरसता था, किन्तु आज दूरस्थ देशों के लोगों की आवाज घर बैठे सुन सकते हैं और इस प्रकार मानो वह हमसे बात कर रहे हैं। आज थोड़े ही समय में भारत के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पत्र पहुँच जाता है, और तार इससे भी शीघ्र पहुंचता है। एक समय वह था कि सामान्य दशा में जो कोई परदेश जाता था तो उसका आना सन्देह जनक था और कहा सुना क्षमा कराके जाना पड़ता था। यदि कोई बरसों में आता और कुशल मंगल की सूचना देता है तो ईश्वर का धन्यवाद अदा करता है अन्यथा कोई ख़ैर ख़बर नहीं मिलती थी। परन्तु आज यदि कोई लम्बी से लम्बी यात्रा करता है तो वह प्रत्येक स्थान से अपनी ख़ैर ख़बर बतला सकता है और सुगमता-पूर्वक थोड़े ही समय में वापस आ जाता है। आज की परिस्थिति यह है कि आप लन्दन के घन्टों की ध्वनि यहाँ बैठे-बैठे सुन सकते हैं। न्यूयार्क में कोई व्यक्ति व्याख्यान देता है या भाषण करता है तो यहाँ, आप उसी के शब्दों को सुनते हैं। आज से ५० वर्ष पूर्व कोई ऐसी बात कहता तो उसका समझना भी मुश्किल होता, परन्तु आज इन आविष्कारों के बारे में कोई सन्देह करे तो बच्चे भी उस पर हंसे। टेलीफ़ून, टेलीविजन, वाइरलेस, रेडियो तथा विभिन्न प्रकार के सूक्ष्म दर्शकों को देखिये कि आधुनिक ज्ञानात्मक अन्वेषणों तथा वैज्ञानिक आविष्कारों ने हमें कैसे-कैसे साधन प्रदान किये हैं। हमारे दिल में बहुधा यह अभिलाषा एवं आकांक्षा पैदा होती है कि यदि कभी इस युग में शीलवान एवं सदाचारी बनने

www.abulhasanalinadwi.org

की इच्छा, ईश्वर भक्त बनने की कामना, दयालुता, मानवी सद्-भावना तथा एक दूसरे से प्रेम भी होता और इन साधनों का उचित उपयोग किया जाता, तो यह संसार स्वर्ग बन जाता। रह-रह कर हमारे हृदय में एक हूक उठती है और टीस उत्पन्न होती है कि कार्य करने के साधनों में तो इस मात्रा में बाहुल्य, किन्तु इन साधनों से उचित ढगं मे काम लेने वालों का अकाल। आपको अब साधन ढूंढने की आवश्यकता नहीं, साधन स्वयं आप की खोज करते हैं। आज सवारियां स्वयं यात्रियों की तलाश करती हैं और आपस में मुक़ाबला करती हैं। आज रेल विभाग की ओर से टाइम टेबुल प्रकाशित होते हैं, यात्रा के लिये प्रेरणा-दायक स्वास्थ्यवर्द्धक स्थलों तथा ऐतिहासिक स्थानों एवं नगरों के चित्र तथा दृश्य प्रकाशित किये जाते हैं ताकि यात्रा की इच्छा उत्पन्न हो। हवाई जहाज की कम्पनियाँ विज्ञापन देती हैं। स्टेशन पर गाड़ी से उतरते ही होटल वालों से सामना करना पड़ता है। कभी तो वह मधुमक्खी के समान साथ लग जाते हैं और इनसे पीछा छुड़ाना एक समस्या बन जाती है। एक समय था कि यात्री सराय ढूंढता फिरता था और भटियारे या भटियारन की खोज करनी पड़ती थी। आज मामला विपरीत है।

उद्देश्यों तथा शुभकामनाओं का अभाव

परन्तु जिस तीव्र गति से साधनों ने उन्नति की है, हमारे आचार व्यवहार तथा आदमीयत ने प्रगति नही की। एक मनुष्य को यह देख कर दुःख होता है कि पहले आदमी भलाई करना

www.abulhasanalinadwi.org

चाहता था, उसके पास साधन न थे, किन्तु अब साधन हैं तो भलाई की इच्छा एव आकांक्ष दिलों से जाती रही। मैं इसका एक स्पष्ट एवं असंदिग्ध उदाहरण दूं। पहले एक ग़रीब घराने का आदमी पर्देस कमाने जाता था, वह जो कुछ कमाता था उसको घर भेजना एक समस्या थी। या तो वह स्वयं आ जाय या भाग्यवश कोई विश्वासनीय जाने वाला मिल जाय, वह तड़प कर रह जाता था, उसको घर वालों का कष्ट, बच्चों की भूक और उनका रोना याद आता था और कुछ नहीं कर सकता था। न डाकख़ाना था न लाने लेजाने के साधन एवं सुविधायें, किन्तु आज नगर नगर और डगर डगर डाकख़ाने खुले हैं, रुपया मनी आर्डर द्वारा भेजा जा सकता है और तार द्वारा भी। परन्तु कमाने वाले के हृदय में भेजने वाले की इच्छा, घर वालों के दुख दर्द तथा गाँव वालों की दरिद्रता का आभास तक नहीं। सिनेमा, बिहार स्थलों, खेल तमाशों तथा होटल एवं चायखानों से कुछ बचता ही नही, कि वह घर भेजें। डाकखानों का तो यह काम है कि यदि कोई रुपया भेजना चाहे तो उसको पहुंचा दे। परन्तु यदि किसी को भेजने की इच्छा न हो तो डाकख़ाना क्या कर सकता है? इसका कार्य तो सेवा करना है, नैतिक शिक्षा एवं सदाचार की प्रेरणा उत्पन्न करना नहीं। पहले लोग अपना पेट भरने के लिये मुश्किल से रखते थे और सब ग़रीब घर वालों तथा गाँव के पीड़ित तथा निर्धनों को भेज देना चाहते थे, किन्तु आज भेजने तथा सहायता प्रदान करने के सुगम साधन मौजूद है, आदमी के अन्दर दीन दुखियों की सहायता करने का भाव नहीं, सहायता एवं सहानुभूति की भावना लुप्त हो गई,

www.abulhasanalinadwi.org

हमारी वर्तमान संस्कृति में इसका कोई लल्लेख ही नही, अब यह साधन कैसे उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं ?

साधन एवं सुगमतायें शुभ-कामनाओं की स्थानपूर्ति नहीं कर सकतीं।

साधन, भावनाओं, शुद्ध कामनाओं एव आकाक्षाओं का स्थान नहीं ले सकते। आज मनी आर्डर है, तार है, आवा गमन आसान है, धन दौलत की भरमार है किन्तु इसका क्या उपाय है कि दीन दुखियों के प्रति सहानुभूति और स्वाभाव में सेवा का भाव नहीं। संसार की कौन सी संस्था इस सद्भाव को उत्पन्न कर सकती है और ऐसी अवस्था में साधन क्या सहायता प्रदान कर सकते हैं ?

मैं इसका एक दूसरा उदाहरण प्रस्तुत करता हूँ। आप पुरानी किताबें उठा कर अध्ययन कीजिये, बड़े बड़े अल्लाह के नेक बन्दे मनोकामना लिये इस संसार से विदा हो गए कि खुदा उन्हें हज नसीब करे। उन्होंने प्रेम एवं अनुराग से ओत प्रोत हो कर हृदय की उत्सुकता एवं उल्लास को कविता के रूप में प्रदार्शित किया, मन की उत्पीड़ा को अक्षरबद्ध किया परन्तु उनकी यह तमन्ना पूरी न हो सकी, क्योंकि उनके पास न धन था और न यात्रा की सुविधायें प्राप्त थीं। मान लीजिये कि धन भी हो और यात्रा की सुविधायें भी, परन्तु हज की इच्छा एवं अभिलाषा ही न हो तो आप ही बताइये कि यह साधन क्या कर सकते हैं ? पहले लोग काशी, गया और मथुरा के लिये

www.abulhasanalinadwi.org

सैकड़ों मील की पदयात्रा करते थे और यात्रा की कठिनाइयों को सहन करते थे। मान लीजिये कि आज यात्रा की समस्त सुविधाएं पर्याप्त हैं, द्रुतगामी सवारियां उपलब्ध हैं, किन्तु यात्रा की इच्छा एवं अभिलाषा का अभाव हो तो यह समस्त साधन क्या कर सकते हैं ?

साधनों से पूर्व उनका उपयोग करने वाले चाहिये

पैग़म्बर इस तथ्य से अवगत थे कि साधनों की उपलब्धि से पूर्व उनका उपयोग करने वालों की आवश्यकता है। ख़ुदा ने उन्हें अक्ल ईमानी[1] और नुबूव्वत की ज्योति प्रदान की थी। उन्होंने साधन जुटाने से पूर्व साधनों का उचित रूप से प्रयोग करने वाले बनाए। सवारियों का प्रयोजन करने से पूर्व उनसे लाभ उठाने वाले और उद्देश्यपूर्ण यात्रा करने वाले पैदा किये। साधनों की उपलब्धि से पूर्व अपनी क्षमताओं तथा ईश्वर प्रदत्त सुखसामग्रियों का सदुपयोग सिखाया। उन्होंने मनुष्यों में शुभ कामनाएं उत्पन्न कीं। शुभ कामनायें यों ही उत्पन्न नहीं होती, वह विश्वास एवं आस्था से उत्पन्न होती हैं। आस्था अभिलाषा उत्पन्न करती है, अभिलाषा कर्म का संकल्प उत्पन्न करती है, और संकल्प साधनों को प्रयोग कर क्रियान्वित रूप धारण करता है। साधन तथा मानवी प्रयत्नों के परिणाम सदैव मनुष्य के संकल्प पर आधारित रहे। शुभकामना जीवन की सबसे बड़ी शक्ति एवं सम्पत्ति, किन्तु संसार के प्रवीण दार्श-

---

१ ईमान युक्तबुद्धी—(अनु०)

www.abulhasanalinadwi.org

निक, नेता तथा वैज्ञानिक इस मर्म को समझने में असमर्थ रहे। यह केवल ईश्वरीय मार्ग दर्शन तथा पैग़म्बरों का विवेक था कि उन्होंने सर्व प्रथम शुभ कामनायें उत्पन्न कीं, मनुष्य को सदाचारी बनने, दूसरों के प्रति सहानुभूति रखने और सदाचार एवं सत्कर्म को पसन्द करने वाला बनाया। साधन उनके पैरों तले और उनकी इच्छाओं के पीछे पीछे। उनकी बुद्धि सही मार्ग-दर्शन से विचलित नहीं होती थी। वह इन्सानों के दिल बनाते थे और उनके मस्तिष्क ढालते तथा निखारते थे। ख़ुदा के पैग़म्बरों ने संसार को विज्ञान नहीं दिया, इन्सान दिये और इन्सान ही इस दुनिया का सत एवं सार है।

पैग़म्बरों ने इन्सान तैयार किये

पैग़म्बरों ने वह इन्सान तैयार किये जो आत्म संयमी थे और साधनों द्वारा अपनी इच्छाओ की पूर्ति के प्रतिकूल मानवता की सेवा करने का कार्य सम्पन्न करते थे। उनमें से कुछ तो ऐसे थे जिनको वे साधन तथा सुखसामग्री उपलब्ध थीं जिनके द्वारा वह इससे विरक्त रहे, वह राजसी ठाट बाट से जीवन व्यतीत कर सकते थे, किन्तु धैर्य एवं संयम का जीवन व्यतीत कर दिया। हज़रत उमर (रज़ीयल्लाहुअन्हु) को वह सुख समृद्धि तथा आमोद प्रमोद के समस्त साधन प्राप्त थे, जिनके द्वारा ईरान के सम्राट ने भोग-विलास का ऐसा जीवन व्यतीत किया जिसका उदाहरण संसार के इतिहास में कम मिलता है। हज़रत उमर के अधीन रोम साम्राज्य (Roman Emplor) तथा ईरान का पूरा देश था। मिस्र एवं ईराक जसे साधन युक्त तथा उपजाऊ देश आप

www.abulhasanalinadwi.org

के क़ब्जे में थे, भारत की सीमाओं तक उनकी सेनाएँ आ चुकी थीं एशिया-ए-कोचक (तुर्किस्तान आदि देश) के अनेक राज्य आपकी अधीनता स्वीकार कर चुके थे। ऐसा व्यक्ति यदि ऐश करना चाहता तो उसको क्या कमी थी ? किन्तु इन्होंने इस महान एवं विशाल साम्राज्य तथा प्रचुर साधनों से व्यक्तिगत कोई लाभ नहीं उठाया। उनके सरल एवं कठोर जीवन की यह दशा थी, कि उन्होंने अकाल के समय घी तक प्रयोग करना छोड़ दिया था और तेल खाते-खाते उनका गोरा चिट्टा शरीर सांवला हो गया था। उन्होंने इतना कठोर जीवन बना लिया था कि लोग यह कहते थे कि यदि यह अकाल शीघ्र समाप्त न हुआ तो उमर (रज़ीयल्लाह अन्हु) का जीवित रहना मुश्किल है।

उन्हीं के नाम के उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ इससे भी बड़े साम्राज्य के शासक थे। उनकी दशा यह थी कि राजकोष की धनराशि से शीतकाल में सर्व साधारण के लिये जो पानी गर्म किया जाता था उससे स्वयं स्नान करना उचित न समझते थे। एक रात आप शासन प्रबन्ध सम्बन्धी कार्य कर रहे थे। एक व्यक्ति आया, आपके हाल-चाल पूछे और आपके व्यक्तिगत जीवन से सम्बन्धित विषय पर वार्तालाप करने लगा। आपने तुरन्त दीपक बुझा दिया, जिसमें राजकोष की धनराशि का तेल जल रहा था, ताकि इस वार्तालाप के दौरान जो शासन कार्य से असम्बद्ध था, राज्य का तेल व्यय न हो। यदि वह सुख तथा आनन्द का जीवन व्यतीत करना चाहते तो संसार के बड़े से बड़े भोग-विलास तथा आमोद-प्रमोद का जीवन व्यतीत करने वाले

www.abulhasanalinadwi.org

पराजित हो जाते क्योंकि हर प्रकार की सुख सामग्री यथेष्ट मात्रा में पर्याप्त थी, और उस समय के सभ्य संसार के सब बड़े साम्राज्य के एकमात्र शासक थे। यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ही शिक्षा थी कि अनेकों साधनों के उपलब्ध होने के उपरान्त सरल तथा संयमी जीवन में कोई अन्तर नहीं आया।

यूरोप की विवशता, उद्देश्यों के प्रति निराशा एवं असफलता

मित्रो तथा भाईयो ! यूरोप की आज सबसे बड़ी कमजोरी एवं विवशता यह है कि उसके पास पर्याप्त मात्रा में साधन उपलब्ध हैं लेकिन शुभाकांक्षाओं तथा विशुद्ध दृढ़संकल्प का अभाव है। वह एक ओर धन-साधन में क़ारून[1] हैं तो शुद्ध विचारों तथा उद्देश्यों में रंक ! उसने जगत के मर्म तथा भेदों को अभिवक्त किया और प्राकृतिक एवं भौतिक शक्तियों को अपना दास बनाया। उसने समुद्र तथा अन्तरिक्ष पर विजय प्राप्त की परन्तु अपनी मनोकामनाओं तथा आकांक्षाओं को वश में न कर सका, उसने विश्व की ग्रन्थियों को सुलझाया किन्तु अपने जीवन की ग्रन्थि को न सुलझा सका, उसने अस्त-व्यस्त तत्वों तथा भौतिक शक्तियों में व्यवस्था एवं नियंत्रण स्थापित किया, लौकिक जीवन में क्रान्ति उत्पन्न कर दिया, फिर अपने अव्यवस्थित जीवन को व्यवस्थित रूप न दे सका—

१ प्राचीन काल का एक प्रसिद्ध धनवान (अनु०)

www.abulhasanalinadwi.org

जिसने सूरज की शुआओं[1] को गिरफ़्तार किया
ज़िन्दगी की शबे तारीक[2] सहर[3] कर न सका
ढूंढ़ने वाला सितारों की गुज़रगाहों[4] का
अपने अफ़्कार[5] की दुनियां में सफ़र कर न सका

क्या अच्छा होता कि उसके पास इतने धन वैभव तथा व्यापक साधन न होते, परन्तु शुद्ध विचार और मानवता की सेवा करने का सत्य भाव होता।

साधन विनाश का कारण क्यों

बुद्धि की कुटिलता तथा संकल्प की भ्रष्टता ने इन साधनों को मनुष्यता के लिये अति भयंकर तथा आशंकापूर्ण बना दिया है। एक व्यक्ति जिसका हृदय निर्दयी तथा अत्याचारी है यदि उसके पास तेज़ छुरी है तो अधिक हानि पहुँचायेगा और गुठ्ठल है तो कम। संस्कृति ने उन्नति की किन्तु मनुष्य के चरित्र में प्रगति न हुई, फलस्वरूप नित्य नवीन साधन मानवता के लिये दुखदायी तथा कष्टदायी बन गए। तीव्र गति की सवारियों ने अत्याचार की गति तेज़ कर दी और अत्याचारियों को पलक झपकते एक ओर से दूसरे छोर तक पहुँचा दिया। आज से पूर्व अत्याचारी बैल-गाड़ियों पर बैठ कर जाते थे और अत्याचार करते थे। चूंकि पहुँचने में जितना विलम्ब होता था अत्याचार में उतनी देर होती थी और निर्बलों को सांस लेने और कुछ दिन

---

१ किरणों २ अन्धेरी रात्रि ३ प्रातः भोर ४ मार्गों
५ विचार

www.abulhasanalinadwi.org

विश्राम करने का अवसर मिलता था। काल ने प्रगति की और नये युग के अत्याचारी तीव्र अति तीव्र गति की सवारियों पर बैठ कर संसार के एक ओर से दूसरे छोर तक सुगमतापूर्वक पहुँच जाते हैं और शक्तिहीन जातियों को दबोच लेते हैं और उनको विनाश की गोद में सुला देते हैं।

आधुनिक सभ्यता की असफलता

सज्जनों ! यूरोप तथा अमेरिका के बड़े-बड़े दार्शनिक एवं विचारक इस तथ्य को स्वीकार करने लगे हैं कि वर्तमान सभ्यता ने साधन जुटाए किन्तु उद्देश्यहीन थे। साधन बिना उद्देश्य व्यर्थ हैं। हम एशिया वाले यूरोप से कह सकते हैं कि तुम्हारे साधन तुम्हारी उन्नति और तुम्हारे अनुसंधान एवं अन्वेषण अपूर्ण हैं। सौ साधन एक उद्देश्य की स्थान पूर्ति नहीं कर सकते। तुम्हारी सभ्यता, तुम्हारा जीवन-दर्शन, तुम्हारी प्रगति एवं उन्नति, अच्छे उद्देश्य तथा शुभ-कामनाएं उत्पन्न करने में असमर्थ हैं। तुम यह तो कर सकते हो कि अच्छे साधन उपलब्ध करो किन्तु अच्छे कार्य करने की मनोवृत्ति उत्पन्न नहीं कर सकते। मनोवृत्ति का सम्बन्ध मन से हैं और वहां तक तुम्हारी पहुँच नहीं, और जब तक अच्छे कार्य का शुभ-संकल्प न हो, साधन तथा अच्छे कार्य की संभावनायें कुछ नहीं कर सकतीं। अच्छे कार्य करने की रुचि एवं अभिरुचि उत्पन्न करना पैग़म्बरों का कार्य था और उनकी शिक्षाएँ अब भी एकमात्र साधन हैं। उन्होंने व्यापक रूपसे इसको पैदा करके दिखा दिया। लाखों व्यक्तियों के हृदय में शुभ कार्य की इच्छा, सेवा भाव, अवगुण एवं अत्याचार से घृणा उत्पन्न कर

www.abulhasanalinadwi.org

दी और उन्होंने अपने साधनों द्वारा वह करके दिखा दिये जो आज बड़े से बड़े साधन नहीं कर सकते ।

धर्म के करने का कार्य

बहुत से भाई समझते हैं कि इस युग में धर्म के पास कोई सन्देश नहीं, और धर्म समय की मांगों को पूरा करने में असफल है, किन्तु मैं इसका पूर्ण शक्ति से खण्डन करता हूं और चुनौती (Chalange) देता हूं कि धर्म आज भी यूरोप का मार्ग-दर्शन कर सकता है । शुभ एवं प्रबल धर्म ही है जो सदाचार की प्रवृत्ति तथा शुद्ध कर्म की इच्छा उत्पन्न करता है और यही जीवन की तालिका है । आज संसार घोर अव्यवस्था में ग्रस्त है । यूरोप के पास साधन हैं किन्तु उद्देश्यहीन । यदि साध्य एवं साधनों का संयोग हो जाय तो संसार का सम्पूर्ण कलेवर ही बदल जाय ।

साधनों के बाहुल्य ने देशों को दास बनाया

आज इस आधुनिक सभ्यता ने इतने साधन उपलब्ध कर दिये हैं तो उनको क्रियान्वित रूप देने का क्षेत्र नहीं मिलता, साधन अपने लिये मन्डियां खोज रहे हैं, यह खोज एवं जिज्ञासा जातियों तथा देशों को दास बनाने और स्वतन्त्र देशों को अपनी व्यापारिक मंडी बनाने पर उद्यत करती हैं । कभी-कभी उसको युद्ध की आवश्यकता पड़ती है, ताकि नए-नए अस्त्र-शस्त्र ठिकाने लगें । महायुद्ध की बुनियाद ही, इन कामातुर अस्त्र बनाने वालों तथा कारखानादारों ने डाली थी, जिनको अपनी सामग्री तथा उपकरणों की खपत युद्ध ही में विदित होती है । आज कपड़ों,

www.abulhasanalinadwi.org

जूतों तथा भांति-भांति के औद्योगिक उपकरणों के नमूने निकलते हैं और उनकी खपत के लिये स्थान नहीं। हमारी इस सभ्यता को साज-सज्जा का हैजा हो गया है और नैतिक बल तथा विश्वास की ज्योति उसके पास आवश्यकता मात्र भी नहीं।

एशिया का कर्त्तव्य

एशियाई देशों का कर्त्तव्य था कि वह यूरोप की सामग्री तथा साधनों की खोज़ा चीनी (उछंवृत्ति) के बजाय इस कठिन तथा जटिल परिस्थिति में यूरोप की सहायता करते, उसको नैतिकता का पाठ पढ़ाते, उसमें ईमान-यक़ीन की ज्योति तथा सदाचारी मनोवृत्ति के संचार का प्रयास करते, इस लिये कि उनके पास धर्म का बल है और यूरोप शताब्दियों पूर्व इस सम्पत्ति से बंचित हो चुका है। किन्तु खेद है कि यह देश स्वयं इस नैतिक प्रवृत्ति तथा मानवी गुणों में दिवालिया होते जा रहे हैं, वह स्वयं यूरोप के रोगों में ग्रस्त होते जा रहे हैं। इन देशों में स्वयं खुदगर्जी[1] तथा खुद फरामोशी[2] की वबा[3] फैली हुई है और शीघ्र अतिशीघ्र धनी बनने का भूत सबार है। इन देशों के समाज को घुन लग गया है। इन देशों के लिये यह सबसे बड़ा खतरा है। इससे कहीं अधिक चिन्ता की बात यह है कि देश की संस्थायें एवं संगठन इस आशंका की अनुभूति से अचेत हैं और नैतिक सुधार, आस्था एवं विश्वास का प्रचार तथा चरित्र निर्माण ऐसे आवश्यक कार्यों की उपेक्षा कर रहे हैं, जब कि यह कार्य समस्त कार्यों से प्रमुख एवं प्रधान था और प्रत्येक रचनात्मक कार्य की पूर्ति इसी पर आलंबित तथा आधारित है।

१—स्वार्थ परता २—आत्मविस्मृति ३—महामारी

www.abulhasanalinadwi.org

समय का गंभीर तथा महत्वपूर्ण कार्य

भाइयो ! यह बात सम्पूर्ण वर्ष के लिये पर्याप्त है, और मैं इस आशा पर कह रहा हूं कि कदाचित् कोई एक जागरूक एवं उत्साह युक्त प्राणी तथा सुशील व्यक्ति मेरी बात मान ले। कहने और करने की बात यही है कि पैगम्बरों का मार्ग अपनाया जाये, ईश्वर के अस्तित्व की आस्था तथा मृत्यु पश्चात् जीवन पर विश्वास उत्पन्न किया जाये, जीवन में ईश्वर का आदेश पालन स्वीकार किया जाये, जिनको ईश्वर ने ज्ञान दिया है, सम्पत्ति दी है और साधन प्रदान किये हैं, वह दुनिया में सदाचारी जीवन के लिये प्रयास करिये। ज्ञान तथा आचार व्यवहार में सामंजस्य एवं सन्तुलन स्थापित कीजिये। ज्ञान तथा ज़बान तो ऋषियों की, और आचार तथा व्यवहार राक्षसों के ! यह कहाँ की मनुष्यता है ? जब तक साधन तथा साध्य में संतुलन और ज्ञान तथा व्यवहार में अनुकूलता नहीं होगी, यह दुनिया इसी तरह बर्बाद होती रहेगी। साधन तथा सामग्री आपको यूरोप से मिल सकती है, मैं उन्हें अपनाने से मना नहीं करता, लेकिन उद्देश्य तथा अच्छे विचार एवं आकांक्षाएँ आपको एक पैगम्बर ही से मिल सकती हैं, और आपके लिये उससे लाभ उठाने के हर समय अवसर प्राप्त हैं। इस विश्वास की सम्पत्ति तथा सदाचार की मनोवृत्ति द्वारा आप अपना जीवन भी संवार सकते हैं और यूरोप को भी हलाकत से बचा सकते हैं. जो उसके सिर पर और उसके द्वारा विश्व के सिर पर मंडरा रही है।

www.abulhasanalinadwi.org

देश की वास्तविक स्वतंत्रता एवं स्वाधीनता

२२, फ़रवरी, १९५५ ई०, को अमीनुद्दौला पार्क, लखनऊ में "मर्कज दावत-ए-इस्लाह व तब्लीग" द्वारा आयोजित एक सार्वजनिक सभा में, जिसमें लगभग छः सात हजार की संख्या में प्रत्येक धर्म तथा विचार के लोग सम्मिलित हुए, एक व्याख्यान दिया गया।

www.abulhasanalinadwi.org

मित्रो तथा भाइयो !

हम और आप जिस स्थान पर एकत्र है, यह पार्क हिन्दुस्तान के इतिहास में बड़ा महत्व रखता है। स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहासकार इसकी उपेक्षा नहीं कर सकते। जब खिलाफ़त तथा स्वतन्त्रता का आन्दोलन अपनी चरम सीमा पर था, तो यह पार्क बड़ी-बड़ी राजनैतिक सभाओं का केन्द्र था। मेरी आँखों ने यहाँ बड़े-बड़े ऐतिहासिक दृश्य देखे हैं। मैंने यहाँ गाँधीजी तथा बड़े-बड़े नेताओं केभाषण सुने और सिविल डिस ओविडियेन्स के समय यहाँ अंग्रेजी सेना का आधिपत्य भी देखा। जिस समय भारत की स्वाधीनता का स्वप्न देखा गया था, उस समय बड़े-बड़े समझदार लोगों को विश्वास नहीं होता था कि यह स्वप्न कभी वास्तविकता का रूप धारण कर सकेगा। जो लोग २०, ३० वर्ष पूर्व विश्वास दिलाते थे कि स्वतन्त्रता अवश्य प्राप्त होगी, उनकी बात पर शिक्षित वर्ग को भी शंक थी। १९४७ के अन्तिम निर्णय तक ऐसे लोग इस देश में मौजूद थे, जो इन बातों का उपहास करते थे और कहते थे कि ब्रिटिश राज इस देश से, जो उसके मुकुट क कोहनूर, और जिससे संसार में उसकी साख बनी हुई है, कैसे समाप्त हो सकता है। लेकिन देखने वालों ने अपनी आँखों से देख लिया कि यह अनहोनी बात हो कर रही। सत्य यह है कि संसार में कोई बात असम्भव नहीं है, केवल मनुष्य के निर्णय तथा दृढ़संकल्प की शर्त है।

जिस प्रकार आपने निश्चय किया कि देश को अंग्रेजों की पराधीनता से स्वतन्त्र कराना है और अपने नेताओं के

www.abulhasanalinadwi.org

नेतृत्व में कठोर परिश्रम किया और यह स्वप्न पूरा हो कर रहा। इसी प्रकार,यदि आप इससे बढ़कर कोई योजना बनाते और उसके लिये भी बलिदान देते तो वह भी पूरा हो सकता था, किन्तु उस समय स्वतन्त्रता ही उच्चतम तथा अन्तिम उद्देश्य विदित होता था। निःसंदेह स्वतन्त्रता बहुत बड़ी दौलत और जीवन की महत्वपूर्ण आवश्यकता है, और इसके लिये जो बलि दी जाए वह उचित है। हमको उन नेताओं का भी आभारी होना चाहिये जिन्होंने स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया और देश को स्वतन्त्र कराया। परन्तु मैं बिल्कुल ही स्पष्ट शब्दों में निवेदन करूंगा--हमारा यही बल तथा निर्णय-शक्ति जिस के कारण हमारे देश से दासता की भावना समाप्त हुई, यदि इससे कहीं अधिक वास्तविक तथा पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु और मानवता निर्माण एवं कल्याण तथा इन्सान को इन्सान बनाने के लिये व्यय की जाती तो यह संसार का महत्त्वपूर्ण कार्य और समस्याओं तथा जटिलताओं का सार्थक एवं स्थायी हल होता।

मैं स्वतन्त्रता आन्दोलन का तिरस्कार एवं अकृतघ्नता नहीं करता, किन्तु यह कहे बिना भी नहीं रह सकता कि संसार का अति उत्तम तथा महान कार्य और मानवता की सबसे बड़ी सेवा यह है कि इन्सान सही अर्थों में इन्सान बन जाय, इसके बिना स्वतन्त्रता एवं स्वाधीनता के बाद भी जीवन का वास्तविक आनन्द और सही खुशहाली प्राप्त नहीं हो सकती और द्विधा तथा असमंजस एवं असन्तुष्टि समाप्त नहीं हो सकती। संकट, विपत्ति तथा

www.abulhasanalinadwi.org

अपमान सदैव दूसरों के रूप में नहीं आता, वह कभी अपने अन्दर से भी उभरता है। अन्याय, अत्याचार तथा लूट खसोट के लिये विदेशी होना शर्त नहीं, एक देश के रहने वाले स्वयं अपने देश में स्वतः इस सेवा की पूर्ति करने लगते हैं। मैं दासता तथा गुलामी से घृणा कदापि कम नहीं करना चाहता, परन्तु क्षण मात्र भावनाओं तथा पक्षपात से विरक्त होकर विचार कीजिये कि हम अंग्रेजों को अपना शत्रु क्यों समझते थे, और गुलामी से क्यों घृणा करते थे, इस लिये कि हमें वास्तविक जीवन में आनन्द प्राप्त न था, हम सुख शान्ति से वंचित थे, हम को हमारी जीवन सम्बन्धी आवश्यकताएँ उपलब्ध न थीं, हम सहानुभूति, मैत्री तथा प्रेम और सहयोग से वंचित थे, जिसके बिना जीवन नीरस तथा संसार एक कारावास के समान है। मित्रों ! कल्पना करो यदि बाहर की गुलामी चली गई, लेकिन—हम को स्वयं एक दूसरे को गुलाम बनाने की चाट पड़ गई, हम को स्वयं एक दूसरे पर अत्याचार करने में आनन्द प्राप्त होने लगा, हम भी एक दूसरे से अपरिचित हैं, सहयोग एवं सहानुभूति से अनभिज्ञ हैं, एक नागरिक दूसरे नागरिक के साथ वही व्यवहार करने पर तत्पर है, और मौके का मुन्तजिर है जो एक विजेता एक दास के साथ और एक शत्रु दूसरे शत्रु के साथ करता है। मैं अपने अनावश्यक तथा अतिरिक्त सामान में, आप के जीवन की आवश्यकताओं को छीनकर, अभिवृद्धि करने के लिये हठ एवं आग्रह कर रहा हूँ, देश में इस मनोवृत्ति का विकास तीव्र गति से हो रहा है, जिसको कुरआन मजीद में एक कथांक शैली में वर्णित किया है—

www.abulhasanalinadwi.org

कुरुआन मजीद कहता है कि हजरत दाऊद (अलैहिस्सलाम) के पास दो पक्ष मुकदमा लेकर आए, एक ने कहा ऐ पैगम्बर-ए-खुदा ! और ऐ बादशाह-ए-वक्त ! हमारा निर्णय कीजिये। मेरे इस भाई के पास ९९ भेड़ें हैं और मेरे पास केवल एक, किन्तु यह अत्याचारी कहता है कि अपनी एक भेड़ भी दे दो ताकि मेरी सौ की गिनती पूरी हो जाय।

मैं आप से पूछता हूँ कि यदि देश के नागरिकों की यही मनोवृत्ति होती चला जाए, तो क्या इस देश को वास्तविक स्वतन्त्रता प्राप्त है, क्या यह सत्य नहीं है कि देश का प्रत्येक नागरिक वही पार्ट अदा करना चाहता है जो दूसरे देश की एक जाति इस देश के वासियों के साथ अदा करती थी, और क्या वह समस्त कठिनाइयां किसी भी रूप में विद्यमान नहीं ? यह सब इस कारण कि देश की स्वतन्त्रता प्राप्त हेतु जान-तोड़ प्रयत्न किया गया और देश स्वाधीन हो गया लेकिन मनुष्य के मन एवं मस्तिष्क तथा उसकी अन्तरात्मा की स्वतन्त्रता के लिये कोई प्रयास नहीं किया गया···और वह अनवरत गुलाम रहे। देश से जालिम तथा अत्याचारी को निकाल दिया गया परन्तु हृदय से अत्याचार की भावना को नहीं निकाला गया, वह अपने स्थान पर विराजमान है और अपना काम कर रही है।

www.abulhasanalinadwi.org

पैगम्बरों ने खुदा की दी हुई तमाम शक्ति तथा सम्पूर्ण ध्यान सार्थक एवं सिद्ध पुरुष बनाने पर व्यय किया। उन्होंने केवल देश की स्वतन्त्रता को अपना लक्ष्य नहीं बनाया वरन् उन अनुभूतियों को उत्पन्न करने पर, उस आस्था एवं विश्वास को मन तथा मस्तिष्क में आसीन करने और सदाचार उत्पन्न करने पर, अपना पूर्ण ध्यान केन्द्रित किया जिसके साथ न बाहर की दासता की सम्भावना थी न अन्दर की गुलामी की, जिन के होते हुए आदमी न दूसरों का अत्याचार सहन कर सकता था, न दूसरों पर अत्याचार करना उचित समझता था, जिनकी बदौलत न दूसरों का शिकार हो सकता था। व ग़ैरों का शिकारी बन सकता था। मुहम्मदु-रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उदाहरण लीजिये, आपके चारों ओर वीर तथा निर्भीक और जान न्योछावर कर देने वालों का जो दल एकत्र हो गया था उसको आप हर प्रकार से प्रयोग कर सकते थे परन्तु आपने चरित्र एवं आचरण निर्माण में अपनी पूरी शक्ति लगा दी। निःसन्देह आपने इन्सानियत को वे आविष्कार, साधन तथा उपकरण नहीं प्रदान किये जो यूरोप के वैज्ञानिकों ने इस आधुनिक काल में दिये, लेकिन आप ने अबू बक्र तथा उमर, उस्मान तथा अली (रजीयल्लाहु अन्हुम) जैसे इन्सान प्रदान किये जो मानवता के पक्ष में अनुकम्पा तथा सम्पन्न ता की प्रतिमा थे। आज भी यदि मानवता से प्रश्न किया जाय कि उसको अबू बक्र जैसा व्यक्ति राज्य

www.abulhasanalinadwi.org

तथा शासन हेतु चाहिये या उत्तम से उत्तम आविष्कार तो वास्तव में उसका उत्तर यही होगा कि उसको अबू-बक्र जैसा मनुष्य चाहिये, इसलिये कि उसने इन आविष्कारों को भली भांति परख लिया है कि वास्तविक इन्सानों की अनुपस्थिति में वह संसार के लिये विपत्ति एवं संकट का कारण बन गए हैं।

Master Key

मित्रो ! हमने बार-बार कहा है और हमेशा कहेंगे कि सबसे महत्त्वपूर्ण तथा प्रधान कार्य यह है कि मनुष्य को सही अर्थों में मनुष्य बनाया जाय। उस के अन्दर से पाप तथा अत्याचार की भावना का अन्त हो, सदाचार तथा सेवा-भाव उत्पन्न हो। मानव जीवन के सम्बन्ध में सहस्रों गाँठें पड़ती है, मानवी जीवन की सहस्रों जटिलतायें तथा समस्यायें हैं, उन पर भारी ताले पड़े हुए हैं इन समस्त तालों को खोलने की एक ही कुंजी है। उसको सर्व कुंजी कहिये या मास्टर की (Master Key) यह कुंजी खुदा के पैगम्बरों को मिलती है, और जिसको मिलती है, उसी के द्वारा मिलती है। यह तालिका क्या है, ईश्वर के अस्तित्व की आस्था एवं उसका भय। इस कुंजी द्वारा मानवी जीवन का प्रत्येक ताला खुल जाता है, और उसकी गांठें सुगमतापूर्वक सुलझती चली जाती हैं। यों समझिये कि पैगम्बरों का हाथ बिजली के बटन पर होता है, उन्होंने स्विच (Switch) दबाया और सारा घर प्रकाशमान हो गया। जिस का हाथ इस स्विच तक नहीं पहुंचता वह किसी तरह भी रोशनी नहीं ला सकता।

www.abulhasanalinadwi.org

आज चरित्र निर्माण तथा नैतिक सुधार के बिना कोई योजना सफल नहीं

आज प्रत्येक देश की उन्नति एवं प्रगति तथा नवीन व्यवस्था हेतु नई नई योजनाएँ एवं परियोजनाएँ (Prolects) बनाई जा रही हैं। हमारे देश में भी यह कार्य अति तीव्रगति से हो रहा है। खुदा इन योजनाओं को सफल करे, परन्तु यह योजनाएँ हमारी दृष्टि में अभी तक अधूरी तथा अपूर्ण हैं, इनमें मानवता के निर्माण, चारित्रिक तथा नैतिक सुधार का कोई स्थान नहीं। हमारा विश्वास है कि मनोवृत्ति में जबतक लोभ एवं लोलुपता की अग्नि सुलगती रही हैं, दौलत का भूत सवार है, मनुष्य जबतक रुपया कमाना और ऐश करना जीवन का लक्ष्य समझता है, उस समय तक कोई खाका और कोई योजना सफलतापूर्वक क्रियान्वित नहीं हो सकती। जिन देशों में यह योजनाएं पूर्ण रूपेण क्रियान्वित हो चुकी हैं वह बहुत समय पहले इन लक्ष्यों की प्राप्ति कर चुके हैं, क्या उनको वास्तविक सुख एवं शान्ति प्राप्त है ? क्या वहां अपराध नहीं होते ? अपराधों में तो वे देश हमारे देश से कहीं अधिक आगे हैं। वहां दिन-दहाड़े डाके पड़ते हैं, बड़े बड़े धनियों तथा कार-खानादारों को रास्ता चलते उड़ा लिया जाता है और फिर उनके सगे सम्बन्धियों को धमकी देकर बड़ी-बड़ी रक़में वसूल की जाती हैं। आज उन देशों का नैतिक पतन इस स्तर तक गिर चुका है कि उनको अपने अस्तित्व को क़ायम रखना एक समस्या बन गयी है। एकराष्ट्रवाद एवं स्वदेश प्रेम का कोलाहल है,

www.abulhasanalinadwi.org

जो उनको थामे हुए है ,फिर भी उनका पतन दूर नहीं और इक़बाल का यह कहना अनुचित नहीं—

> ख़ुद बख़ुद गिरने को है पक्के हुए फल की तरह
> देखिये गिरता है आख़िर किस की झोली में फ़िरंग[1] ।

चरित्र एवं आचरण की आवश्यकता

सज्जनो ! यह धन दौलत की होड़, यह अपराधी प्रवृत्ति, यह अन्याय तथा अत्याचार की अभिलाषा किसी धर्म की अनुयायी तथा किसी जाति की समर्थक एवं मित्र नहीं। चोर तथा अपराधी का धर्म न हिन्दू है न मुसलमान। जिसका यह स्वभाव बन जाय और जिसके अन्दर इस प्रकार आचरण अंकुरित हो जाय, उसको इस बात की कोई परवाह नहीं होती कि वह जिस का गला काट रहा है, वह किस धर्म तथा वर्ग का है, वह तो भाई को भाई नहीं देखता। कोई दुर्घटना इससे बढ़कर नहीं और कोई ख़तरा इससे अधिक संगीन नही कि ख़ुदा के नाम पर इस देश में कोई आवाज़ उठाने वाला न हो, कहीं कोई आचरण के सुधार तथा वास्तविक मानवता का आवाहन एवं आन्दोलन न हो। आज हमारा साहित्य एवं सहाफ़त (पत्रिकारिता) तथा हमारे समाज पर या व्यापार का आधिपत्य है या राजनीति का। देश के बड़े-बड़े पत्र एवं पत्रिकाएँ उठा कर देखिये, केवल इन दो विषयों के अतिरिक्त कोई ऐसी बात न मिलेगी जिसका सम्बन्ध आध्यात्मिकता अथवा सदाचार या इन्सानियत से हो। इस विषय

१—अंग्रेज़

1455
14854

www.abulhasanalinadwi.org

में समस्त राजनैतिक दल एवं संस्थाएँ एक मत हैं। किसी को इस परिस्थित के प्रति कोई विरोध एवं मत भेद नहीं। उनका विवाद केवल इस बात पर है कि उनको नेतृत्व तथा लीडर शिप (Leader Ship) प्राप्त हो और जो कुछ हो रहा है वह सब हमारी सम्मति एवं निर्देशन में हो।

नैतिक पतन

नैतिक पतन होते-होते इस सीमा को पहुँच गया है कि अब मनुष्य की मनुष्यता के तृस्कार एवं अपमान से मनोरंजन प्राप्त किया जाता है, बल्कि अभिरुचि इतनी दूषित हो गई है कि मनुष्यता जितनी पतित तथा निम्न स्तर पर उतरे उतना ही विनोद एवं तुष्टि की अनुभूति होती है। यह फ़िल्म तथा चित्र-पट, यह उपन्यास तथा अफ़साने, यह नग्न चित्र तथा अश्लील गाने क्यों आपके मनोरंजन का साधन हैं। क्या इन में मनुष्यता को तिरस्कृत तथा दूषित रूप में नहीं प्रस्तुत किया जाता, क्या यह आदम के बेटों तथा हव्वा की बेटियों को जो आपके भाई तथा बहनें हैं, ऐसे रूप में नहीं प्रदर्शित किया जाता जो लज्जा एवं अपमान का कारण हैं। क्या आपको इन चित्रों तथा खेलों, इन फ़िल्मों तथा उपन्यासों में मनुष्यता का अपयश एवं अपमान दृष्टगोचर नहीं होता? फिर आप की अन्तःवृत्ति में इनके विरुद्ध उत्तेजना एवं घृणा का भाव उत्पन्न क्यों नहीं होता, आप इनको किस प्रकार सहन करते हैं? जब कोई समाज नैतिक दृष्टिकोण से आदर्शभूत होता है तो उसका कोई सदस्य किसी अन्य सदस्य का अपमान सहन करना तो अलग रहा, उसके बारे

www.abulhasanalinadwi.org

में किसी अनैतिक व्यवहार का सुनना भी सहन नहीं करता। क़ुरआन मजीद में एक असत्य आरोप का उल्लेख करते हुए कहा गना है, "कि तुमने सुनते ही क्यों न इसका खण्डन किया और स्पष्ट कह दिया कि एक तूफ़ान एवं मिथ्यारोपण मात्र है। तुम ने अपने बारे में सत्य विचार क्यों नहीं किया।" और अपने ऊपर विश्वास क्यों नहीं किया यह है उस सूसाइटी (समाज) की बात जो आदर्श समाज (Ideal Society) कहलाने के योग्य है, जिसमें हर सदस्य दूसरे सदस्य का दर्पण होता है। इसकी तुलना उस गिरी सुसाईटी से कीजिये, जिसके कुछ सदस्य दूसरे सदस्यों के नैतिक पतन; शिष्टता, सज्जनता तथा मनुष्यता के प्रतिकूल गति-विधियों से स्वाद एवं मनोरंजन प्राप्त करते हैं। एक इन्सान अपने शरीर को नग्न करता है, आमोद-प्रमोद का शिकार बनता है, अपने मान, मर्यादा एवं अन्तरात्मा को बेच देता है और सैकड़ों हजारों व्यक्ति उसका तमाशा देखते हैं और मनोरंजन प्राप्त करते हैं। नैतिक पतन एवं निर्लज्जता का इससे अधिक शिक्षाप्रद एवं शोचनीय उदाहरण और क्या हो सकता है। यही वह लक्षण एवं स्थितियाँ हैं जिनसे आशंका होती है कि यह देश अपनी सम्पूर्ण प्रगति एवं बाह्य सुख सम्पन्नता के बावजूद कहीं पतन का शिकार न हो जाय। यह दुराचार, पाप एवं भोग-विलास की प्रवृत्ति, रोगों तथा महामारी से कहीं अधिक भयानक है। आप किसी पूर्व कालीन जाति एवं राष्ट्र का नाम बता दीजिये जिसके बारे में इतिहास बतलाता हो कि वह पूरी की पूरी जाति अमुक बीमारी अथवा महामारी से ग्रस्त होकर बिल्कुल विनष्ट होकर भूमण्डल

www.abulhasanalinadwi.org

से विलीन हो गई, परन्तु मैं आपको ऐसी बीसियों जातियों का नाम बतला सकता हूँ जो दुराचार एवं दुर्व्यवहार का शिकार होकर पृथ्वी में विलीन हो गईं।

मानवता

सज्जनो! आपने इस देश की स्वतंत्रता के लिए प्रयत्न किये, उसके लिये बलिदान दिया और उसके लिये आपने उस मार्ग को अपनाया, जिसका आपके नेताओं ने परामर्श दिया। वह काम गया इतना ही था कि देश स्वाधीन हो जाय, अतएव यह देश स्वतन्त्र हो अब इन्सानों में सही इन्सानियत पैदा करने के लिये नए सिरे से परिश्रम करना पड़ेगा। इसका यही एक मार्ग है, और वह वही मार्ग है, जो ख़ुदा के पैग़म्बरों ने बतलाया और उस पर चल कर उनके अनुयायी अपने लक्ष्य को पा गए, और उन्होंने ससार में वास्तविक मनुष्यता का आदर्श प्रस्तुत किया। इसका सिरा वही आस्था एवं विश्वास तथा ईश्वर का भय है। यह सच्ची ख़ुदापरस्ती, यह जाग-रूकता विश्वास एवं अन्तरात्मा पैग़म्बरों के अतिरिक्त किसी और स्थान से प्राप्त नहीं हो सकती। इसका खजाना वहीं है और हमको इस खज़ाने से प्राप्त करने में लज्जा एवं संकोच की अनुभूति न होना चाहिये। यदि आज उसकी प्राप्ति तथा उसके आवा हन- एवं प्रसार हेतु वही प्रयास एवं परिश्रम आरम्भ हो, देश की स्वतन्त्रता के लिये जो बलिदान दिये गए वही बलिदान इस मार्ग में हों, विदेशी सरकार को निकालने के लिये जो कष्ट एवं दुख सहन किये गए थे वही सब कष्ट सहन किये जायँ तो देश की रूप रेखा ही कुछ और हो। वास्तविक सुख एवं शान्ति की प्राप्ति

www.abulhasanalinadwi.org

हो, हर तरह की गुलामियों का सिलसिला बन्द हो, और देश को वास्तविक स्वतन्त्रता तथा जीवन का वास्तविक आनन्द उसी समय प्राप्त हो सकता है।

www.abulhasanalinadwi.org

नफ्स परस्ती अथवा खुदा परस्ती

(इच्छाभक्ति अथवा ईश्वर भक्ति)

मौलाना सय्यद अबुल हसन अली 'नदवी' का वह भाषण, जो "दावत-ए-इस्लाह व तब्लीग" द्वारा आयोजित, २८ नवम्बर, १९५४ ई० की रात में अमीनुद्दौला पार्क की एक सभा में दिया गया। जिसमें प्रत्येक धर्म तथा विचार धारा के लोग उपस्थित थे। बड़ी संख्या में गैर मुस्लिम भी सम्मिलित थे। उपस्थित महानुभावों की संख्या लगभग दस बारह हजार थी।

www.abulhasanalinadwi.org

स्पष्ट एवं खरी बातें

मित्रो ! मैं इस समय आपसे कुछ दिल की बातें कहना चाहता हूं जैसे मैं आप में से प्रत्येक के साथ एकान्त चित बैठा हुआ वार्तालाप कर रहा हूं। यद्यपि इसकी सम्भावना होती कि आपमें से प्रत्येक मित्र से अलग ही अलग अपने दिल की बात कह सकता तो अवश्य ऐसा ही करता, ताकि आप इसे व्याख्यान समझ कर नहीं अपितु एक मित्र का दर्द दिल समझकर सुनते, किन्तु क्या करूँ ऐसा सम्भव नहीं है। यदि यह बात सम्भव होती तो एलेक्शन में खड़े होने वाले उम्मीदवार अवश्य इसको व्यवहारिक रूप देते और वह अपने चुनाव सम्बन्धी अभियान में सभायें आयोजित न करते, इसलिये कि उन्हें इन जलसों में वह बातें कहनी होती हैं, जो एकान्त में ले जाकर कान में भी कहनी भारी पड़ती हैं अर्थात् अपनी प्रशंसा, तथा योग्यता की अभिव्यक्ति साथ ही अपनी प्रतिष्ठा एवं विभूति में स्वतः यशगान। अतः मैं बस इतना ही कह सकता हूँ कि मेरा आपसे यह निवेदन है कि कृपया आप मेरे आवेदन को स्टेज (मंच) की नहीं, अपितु दिल की बातें समझ कर सुनिये।

इच्छा भक्ति अथवा ईश्वर भक्ति

मित्रो तथा महानुभावो ! दुनियां में अनेक जीवन पद्धतियां प्रचलित हैं, और उसके विभिन्न भेद समझे जाते हैं—प्राच्य जीवन, पाश्चात्य जीवन, आधुनिक जीवन पद्धति, प्राचीन जीवन पद्धति आदि। परन्तु वास्तव में जीवन के केवल मौलिक भेद दो

www.abulhasanalinadwi.org

हैं—एक इच्छा भक्ति युक्त जीवन, दूसरा ईश्वर-भक्ति युक्त जीवन है। शेष जितने भेद प्रथक-प्रथक नामों से प्रसिद्ध हैं वे सब इन्हीं दो के उपभेद हैं॥

इच्छा भक्ति जीवन का तात्पर्य मनुष्य के अपने आप को बेलगाम समझ कर जो मन में आये उसी के अनुरूप कर डाले। इसको इच्छित जीवन भी कह सकते हैं। दूसरे प्रकार का जीवन एक ऐसे व्यक्ति का जीवन है, जो यह आस्था रखता है कि उसे किसी ने पैदा किया है और वह जीवन प्रदान करने वाला ही उसका स्वामी तथा पालनहार है, वही उसकी आवश्यकताओं तथा उद्देश्यों की अधिकतम पूर्ति करता है। उसकी ओर से जीवन व्यतीत करने के कुछ नियम तथा व्यवस्थाएँ हैं, जिनका पालन करना आवश्यक है।

नफ़्स परस्ती सदैव खुदा परस्ती की प्रतिद्वन्दी रही है।

हिन्दुस्तान में महाभारत एक बहुत बड़ा ऐतिहासिक युद्ध हुआ है। मुझे उसकी ऐतिहासिक मान्यता से इन्कार नहीं, किन्तु इस संसार में एक दूसरी महाभारत भी पाई जाती है, यह भारत की प्रसिद्ध महाभारत से भी प्राचीन है। यह वह युद्ध है जो खुदा परस्ती और नफ़्सपरस्ती के बीच हमेशा से जारी है। यह संग्राम किसी एक देश ही तक सीमित नहीं है बल्कि संसार के प्रत्येक देश में पहुँचा और न केवल युद्ध क्षेत्रों तक ही सीमित रहा वरन् यह संग्राम घरों के अन्दर भी हुआ। यह जीवन के दो सिद्धान्त वाद हैं जो सदैव एक दूसरे पर प्रभुत्व स्थापित करने

www.abulhasanalinadwi.org

का प्रयास करते रहे हैं। सज्जनो ! पैग़म्बरों ने अपने-अपने समय में हर स्थल पर ख़ुदा परस्ताना जीवन का आवाहन दिया है, और उनकी सफलता के युग में इसी प्रकार के जीवन को श्रेष्ठतम माना गया है परन्तु नफ़्सपरस्ती (इच्छा भक्ति) सदैव के लिये कभी विलीन नहीं हुई। उसे जब भी अवसर मिला जीवन पर आधिपत्य जमा लिया। दुर्भाग्यवश हमारा भी यही युग है जिसमें नफ़्स परस्ती जीवन पर पूर्ण अधिकार जमाए हुए है। जीवन की प्रत्येक कड़ी उसी के साथ जुड़ी हुई है। नफ़्स परस्ती घरों में, बाजारों में, दफ़्तरों मे, कारख़ानों में मानों एक समुद्र है, जो कि सम्पूर्ण पृथ्वी पर प्रवाहमान है। और हम उसमें गले-गले उतरे हुए हैं।

नफ़्स परस्ती स्वंय स्थायी रूप से एक धर्म

नफ़्स परस्ती अब स्थायी रूप से एक धर्म का रूप धारण कर चुकी है, नहीं ! बल्कि आदि से इसकी यह दशा रही है, और प्रायः इसी धर्म के मानने वालों की संख्या सब से अधिक रहती है। सामान्यतः धर्मों की सूची में इस नाम का कोई धर्म नहीं बतलाया जाता। न ही इस धर्म के अनुयायियों की जनगणना होती है, किन्तु यह अपनी जगह एक तथ्य है कि यह संसार का सब से बड़ा धर्म है और इसके मानने वाले सबसे अधिक संख्या में पाये जाते हैं। आपके समक्ष विभिन्न धर्मों के अनुयायियों के आंकड़े आते हैं, कि ईसाई धर्म के अनुयायी और हिन्दू धर्म के मानने वालों की संख्या इतनी है किन्तु इनमें से सभी में बड़ी मात्रा उन लोगों की होती है जो कहने को

www.abulhasanalinadwi.org

तोईसाई, हिन्दू और मुसलमान हैं परन्तु वास्तव में इसी धर्म नफ़्सपरस्ती के अनुगामी हैं।

नफ़्स परस्ती के जीवन का रिवाज, और इस धर्म की सर्व-मान्यता केवल इसी कारण है कि मनुष्य जाति को इस में अधिक स्वाद मिलता है। माना कि नफ़्स परस्ती का जीवन अति स्वाद-प्रद एवं आनन्द मयी है, और हर व्यक्ति की स्वाभाविक इच्छा लौकिक आनन्द प्राप्त करने की होती है, परन्तु यदि संसार के समस्त इन्सानों को समक्ष रखकर सोचा जाय तो इस प्रकार का जीवन संसार के लिये एक अभिशाप है, और उसकी समस्त विपत्तियां और दुख इसी नफ़्स परस्ती के परिणाम हैं, संसार के समस्त विनाशों, भीषण अकालों तथा अन्यायों का उत्तरदायित्व उन्हीं लोगों पर लागू होता है जो इस मनहूस धर्म के अनुगामी हैं।

इस संसार में इस धर्म की गुंजाइश केवल उस दशा में निकल सकती है कि पूरी दुनिया में केवल एक व्यक्ति का अस्तित्व हो, इस अवस्था में उसे अपनी मांगों को मनमाने ढंग मे पूरा करने का अधिकार हो सकता है। परन्तु वास्त-विकता यह नहीं है। इस दुनिया के पैदा करने वाले ने करोड़ों तथा अरबों इन्सानों को बसाया है, और उनमें से हर एक के साथ तामसी मन, विषय-वासनायें और नफ़्स की आवश्यकतायें लगी हुई हैं। ऐसी अवस्था में जो भी व्यक्ति मनमाना जीवन व्यतीत करने का प्रयत्न करता है, वह मानो इस तथ्य से आंखें बन्द कर लेता है कि उसके साथ उसी के अनुरूप अन्य प्राणी भी रहते हैं, परन्तु तथ्य की उपेक्षा करने अथवा उसकी ओर से आंखें बन्द

www.abulhasanalinadwi.org

कर लेने से वास्तविकता अथवा सत्य, असत्य में परिवर्तित नहीं हो जाता, सत्य अपने स्थान पर सत्य ही रहता है। अतः कुछ लोगों की इच्छा पूर्ति का परिणाम अनिवार्यतः दूसरों की कठिनाइयों एवं समस्याओं के रूप में विदित होता है।

नफ़्स परस्त मन का राजा होता है।

नफ़्स परस्ती का जीवन व्यतीत करने वाला मन का राजा होता है। मन का राजा वही है कि समस्त ब्रह्माण्ड में अपनी इच्छाओं एवं अभिलाषाओं का सिक्का चलाये तो उसका पेट इतने में भी नहीं भर सकेगा, वह इससे और अधिक का इच्छुक रहेगा—विचार कीजिये कि जब यह सारा जगत एक ही मन के राजा की सन्तुष्टि के लिये अपर्याप्त है, तो आज एक घर की सीमित दुनिया में कई-कई मन के राजा पाये जाते हैं तो वह क्यों कर सुख एवं सन्तुष्टि पा सकते हैं। इस नफ़्स परस्ती के रोग ने एक-एक घर में चार-चार मन के राजा पैदाकर किये हैं। बाप भी राजा, माँ भी रानी, तो किस प्रकार घरों में सुख एवं शान्ति रह सकती है? यह भोग विलास तथा अमोद प्रमोद का जीवन जिस को हर व्यक्ति व्यतीत कर के आनन्द प्राप्त करना चाहता है, एक ज्वाला मुखी बना हुआ है, जिसमें एक ही घर के सदस्य जल रहे हैं। एक देश की जनता भी जल रही है, और संसार की पूरी आबादी झुलस रही है।

नफ़्स परस्ती का जीवन आपत्तियों एवं कठिनाइयों की जड़ है।

मित्रो! दुनिया की आपत्तियों की जड़ यही है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छाओं का आज्ञापालन करना चाहता है, दुनियां

www.abulhasanalinadwi.org

की आपत्तियों का मूल कारण व्यक्ति का इन्द्रियों के वशीभूत होना है। और इन मुसबितों का इलाज यह है कि मन का कहा मानने के बजाय ख़ुदा की आज्ञाओं का पालन करे। यह दुनिया करोड़ों की ती क्या दो आदमियो को भी मन मानी जीवन व्यतीत करने का सामर्थ नहीं रखती। अतः मन माना जीवन व्यतीत करने का ध्यान मन से निकाल दो और उस तरह का जीवन व्यतीत करने का प्रयत्न करो जिसका संदेश ख़ुदा के पैग़म्बरों ने दिया था अर्थात् ख़ुदा परस्ती (ईश्वर भक्ति) का जीवन। इस दुनिया के पैदा करने वाले ने हर युग में इस जीवन के सन्देष्टा पैदा किये क्योंकि इसी जीवन प्रणाली से संसार की व्यवस्था चल सकती थी। इन्ही पैग़म्बरों ने बलपूर्वक इस जीवन पद्धति का आवाहन दिया और इच्छा-भक्ति के वेग को रोकने का भरसक प्रयत्न किया। लेकिन जैसा कि मैं आरम्भ में कह चुका हूँ कि फिर भी इच्छा भक्ति का रिवाज दुनिया से मिटा नहीं, और जब भी ईश्वरभक्ति का आवाहन निर्बल हुआ, इच्छा भक्ति अपनी चरमसीमा को पहुंच गयी, और इस की बाढ़ आते ही संसार की साधारण जनता की बिपत्तियों में वृद्धि हो गई और असहनशील हो गई। उदाहरणर्थ छठी शताब्दी ईसवी का अध्ययन कीजिये। इस शताब्दी में नफ़्स परस्ती के जीवन का रिवाज अपनी पराकाष्ठा को पहुँच गया था, देश-देश में इसकी प्रबलता थी। यह एक छोटी-बड़ी प्रवाह-मान सरिता थी, जिसकी लहरों में बह रहा था। बादशाह अपनी इच्छा भक्ति में व्यस्त था। प्रजा उसके अनुसरण में इच्छा

www.abulhasanalinadwi.org

भक्ति के रोग में ग्रस्त थी। उदाहरण के रूप में ईरान की उस समय की स्थिति का उल्लेख करता हूँ—वहाँ की जनता का प्रत्येक वर्ग इच्छाभक्ति का रोगी था। ईरान के सम्राट् की यह दशा थी कि उसकी स्त्रियों की संख्या बारह हजार थी, जब मुसलमानों ने इस देश को इस विपत्ति से मुक्ति दिलाने के लिये आक्रमण किया और ईरान का सम्राट् सिंहासन छोड़ कर भागा तो ऐसे कठिन समय में भी यह दशा थी कि भागते हुए भी उसके साथ एक हजार बावर्ची थे, एक हजार गबैये थे, और एक हजार बाज तथा शिकरो को देख-भाल तथा व्यवस्था करने वाले थे। किन्तु उसे इस पर भी दुख था कि बड़ी बदहाली में निकलना हुआ। उस समय के जनरल तथा सेनापति एक-एक लाख की टोपी और एक-एक लाख का पटका लगाते थे। उच्चकोटि के वर्ग में साधारण वस्त्र धारण करना मानो अपराध था। परन्तु इस वर्ग की इच्छाभक्ति ने सर्व साधारण को किन आपदों तथा विपत्तियों में ग्रस्त कर दिया था, उसका अनुमान इससे लगाइये कि कृषक वर्ग की दशा यह थी कि वह लगान भी नहीं दे सकते थे और अपनी भूमि छोड़ छोड़कर मठों तथा इबादतगाहों (उपासना गृहों) में जा बैठते थे। मध्य वर्ग के लोग धनियों की रेस में दीवालिया हुए जा रहे थे अतएव आर्थिक लूट-खसोट वर्षा थी, और जिन्दिगी क्या थी एक दौड़ का मैदान थी, अन्याय तथा अत्याचार का बोलबाला था, हर बड़ा अपने छोटे को और प्रत्येक अधिकारी अपने अधीनों को लूटने तथा उसका शोषण करने में लगा

www.abulhasanalinadwi.org

हुआ था, और पूरे समाज में दुर्गन्ध फैली हुई थी। आप समझते हैं कि ऐसे समाज में आस्थाएँ, आचार तथा सदाचार कैसे पनप सकता है और किस को मृत्यु पश्चात् जीवन की चिन्ता तथा नैतिक उत्तारदायित्व की अनुभूति हो सकती है, । इन समस्त उत्तम मान्यताओं को तो इच्छाभक्ति की बाढ़ बहाए लिये जा रही थी, परन्तु कोई न था जो इस बाढ़ पर बन्ध बांधता और इस धारे को रोकता तथा मोड़ता। विद्वान, साहित्यकार तथा दार्शनिक सब के सब तिनकों की भांति बह रहे थे।

रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ही नफ़्सपरस्ती के धारे को मोड़ा।

किसी में भी साहस न था, जो धारे की दिशा के विपरीत पैर कर दिखाता, और धारा भी कौन सा ? पानी का नहीं, सामान्य रिवाज का धारा ? इसका साहस एक वीरवर तथा पराक्रमी ही कर सकता था। ईश्वर की इच्छा थी कि इस धारे को मोड़ा जाय। इस कार्य के लिये उसने अरब देश के मक्का नगर में एक मनुष्य को पैदा किया और उसको नुबूव्वत प्रदान की, जिसको हम मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह [सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम] के नाम से याद करते हैं। जिन्होंने धारे के विरुद्ध केवल पैर कर नहीं अपितु उसकी दिशा को मोड़कर दिखा दिया--उस समय किसी ऐसे व्यक्ति से काम नहीं चल सकता था, जो धारे की दिशा तो न मोड़ सके बल्कि उसमें बहने वाली वस्तुओं को निकाल लाए। अतः उस समय कोई ऐसा सुरक्षित स्थान न था, जहां इस सैलाब का धारा न चल रहा हो। उपासनालयों तथा

www.abulhasanalinadwi.org

कलीसाओं (गिर्जाघर) तक को तो इस बाढ़ ने अपनी लपेट में में ले लिया था इस समुद्र में कोई टापू न था, और अगर था तो प्रत्येक क्षण खतरे की लपेट में था ! विश्वास (ईमान), नैतिकता, आचार व्यवहार, सज्जनता एवं सभ्यता सारांश में मानवता की आत्मा को इस बाढ़ से बचाने का कार्य यदि कोई व्यक्ति कर सकता था, तो वही व्यक्ति कर सकता था, जिसमें धारे की दिशा को मोड़ देने का साहस हो। ऐसी हस्ती उस समय केवल खुदा के उसी अन्तिम पैगम्बर की थी, जिसने सामान्य रिवाज के इस धारे को जो तूफ़ान के समान नफ़्सपरस्ती की दिशा में बह रहा था, कुछ वर्षों के परिश्रम एवं प्रयास से ईश्वरभक्ति की दिशा में मोड़ दिया। हमें छठी शताब्दी (ईसवी) के विश्व के इतिहास में सहसा जो आश्चर्य जनक परिवर्तन विदित होता है, जिसने समस्त जीवन पद्धति और अन्ततः समस्त विश्व को प्रभावित किया, और अब जो कुछ भी मनुष्यता एवं ईश्वर भक्ति की बची खुची पूंजी है, वह सब उन्हीं के परिश्रम का फल एवं देन है :—

बहार अब जो दुनिया में आई हुई है।
यह सब पौद उन्ही की लगाई हुई है॥

सम्भव है कि आप में से किसी को शंका एवं सन्देह हो, कि यह कहना तो उचित नहीं है कि उस समय सामान्यतः लोग केवल नफ़्सपरस्त थे, क्योंकि वहाँ बहुत सी दूसरी "परस्तियाँ"[1]

१ कृत्रिम आस्थाएं, उपासनाएं (अनु०)

www.abulhasanalinadwi.org

भी पाई जाती थीं। कुछ लोग सूर्य की पूजा करते थे, कुछ अग्नि की पूजा करते थे, कुछ सलीब पूजते थे, कुछ वृक्षों को पूछते थे और कुछ पत्थरों को पूजते थे, ठीक है! यह बात अपने स्थान पर सत्य है, किन्तु यह समस्त "परस्तियां" उसी एक परस्ती की क़िस्में थीं, जिसके सामान्य-प्रचलन का मैं दावा कर रहा हूँ। यह समस्त परस्तियां इसीलिये की जाती थीं कि यह नफ्सपरस्ती के विरुद्ध न थीं। यह "परास्तियां" मन माना जीवन व्यतीत करने में विघ्न नहीं डालती थीं। आग, पेड़, पत्थर, सूर्य आदि उनसे न कहते थे कि यह कार्य करो और यह न करो। अतः वह इनकी पूजा के साथ-साथ अपनी इच्छाओं की पूजा भी करते थे अर्थात् इच्छाओं का आज्ञा पालन भी होता था, इन दोनों में कोई पारस्परिक विरोध नहीं था—अस्तु हमारे पैग़म्बर [सल्लल्लाहुअलैहि व सल्लम] ने इस सैलाब से लड़ने तथा उसकी दिशा मोड़ने का बीड़ा उठाया और सम्पूर्ण समाज से लड़ाई मोल ली। यद्यपि आप अपने समाज में सर्व प्रिय तथा सर्वमान्य थे, सत्यवान् तथा अमीन (विश्वसनीय) की प्रतिष्ठित एवं सम्मानित उपाधियों से याद किये जाते थे, और इसलिये आपको उन्नति के सुअवसर प्राप्त थे। आपको अपनी जाति का इतना विश्वास प्राप्त था, कि उन्नति का कोई ऊँचे से ऊँचा स्थान न था, जो आपको न मिल सकता, किन्तु यह सब कुछ जब सम्भव था, जब आप उनकी जीवन-प्रणाली को अनुचित न कहते, और उसको एक दूसरी दिशा में मोड़ने के दृढ़ संकल्प को व्यक्त न करते, किन्तु ख़ुदा ने आपको तो खड़ा ही इसलिये किया था कि धारा की दिशा में न स्वयं बहें और न किसी को बहने दें। अतः सर्वप्रथम

www.abulhasanalinadwi.org

तो आपने अपने जीवन को ख़ुदापरस्ती का आदर्श रूप देकर प्रस्तुत किया, दूसरे शब्दों में धारा की विपरीत दिशा में पैर कर दिखाया, और फिर पूरे समाज की दिशा को इच्छाभक्ति से हटाकर ईश्वर भक्ति की ओर मोड़ देने का प्रयास आरम्भ किया।

ईश्वर भक्ति पैदा करने के तीन मूल आधार

इस प्रयास को सफल बनाने के लिये आपने तीन मूलाधार वस्तुएँ लोगों के समक्ष प्रस्तुत कीं (१) यह विश्वास करो कि तुम्हारा और इस समस्त संसार का पैदा करने वाला, और उस पर हुकूमत करने वाला, एक है। (२) इस बात पर विश्वास करो कि इस जीवन के समाप्त होने के पश्चात् एक दूसरा जीवन है, जिसमें इस जीवन का लेखा जोखा देना है। (३) यह विश्वास करो कि मैं ख़ुदा का भेजा हुआ (पैग़म्बर) हूँ, उसने इस जीवन से सम्बन्धित आदेश देकर मुझे भेजा है, जिन आदेशों का मुझे भी पालन करना है और तुम्हें भी—आपने इन बातों का एलान कर दिया तो समाज मे एक हलचल मच गई, विरोध की धारा प्रवाहित हो उठी, इस कारण कि यह नारा उनके सुखमयी जीवन में विघ्न डालने वाला था, समस्त संसार जिस धारा की दिशा में बह रहा था, उसका त्याग करना कोई सरल कार्य तो था नहीं, जीवन की नौका सुगमतापूर्वक बहाव की दिशा में बहती चली जा रही थी, उन्हें क्या पड़ी थी कि बहाव के विरुद्ध अपनी नैय्या चला कर आपत्ति तथा संकट मोल लें। अतः उन्होंने चाहा कि यह आवाज़ दब जाय। कुछ लोगों ने आपकी नियत पर सन्देह प्रकट किया। उनकी समझ में नहीं आता था कि देखने

www.abulhasanalinadwi.org

में एक उन्हीं जैसा व्यक्ति ऐसे दृढ़-संकल्प वाला हो भी सकता है कि जीवन के इस तूफ़ानी धारे की दिशा मोड़ने की ठाने जिस में केवल हम ही नहीं, संसार की समस्त जातियां, उनके विद्वान, ज्ञानी एवं नीतिज्ञ, उनके पण्डित तथा ऋषि, मुनी, उनकी सभ्यता एवं राजनीति के नेता, उनकी आस्थाएं तथा आचार व्यवहार, उनका ज्ञान तथा दर्शन और उनकी साहित्य एवं शिष्टता खरपतवार के समान बहे चले जा रहे थे। वह इस दृढ़ कथन के बारे में किसी व्यक्ति को विश्वासपात्र मानने के लिये बिल्कुल तैयार न थे, अतः उन्होंने समझा कि इस दाल में कुछ काला अवश्य है, हो न हो इस बुलन्द बांग दावे के पीछे कोई और उद्देश्य तथा कोई और शक्ति काम कर रही है। अतः उन्होंने एक मण्डली रसूलुल्लाह [सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम] के पास भेजी, जिसने अपने विचारानुसार तीन बहुमूल्य बातें आपके समक्ष प्रस्तुत कीं। उसने कहा कि यदि आपके उद्देश्य इस प्रकार की बातों से हो कि हम आपको अपना नेता तथा प्रधान मान लें तो इन बातों को छोड़िये, हम आपको अपना प्रधान स्वीकार करते हैं; अथवा यदि आप को धन दौलत की आवश्यकता है तो हम बड़ी से बड़ी धन राशि आप के लिये उपलब्ध करने को तैयार हैं और अगर आप किसी सुन्दरी से विवाह करना चाहते हैं तो हम इसको भी स्वीकार करते हैं, हम देश की उत्तम रूपवान तथा सुन्दर स्त्री आपको प्रस्तुत कर देंगे, बस आपने जो यह एक नई बात उठाई है उसे त्याग दें। किन्तु ख़ुदा के सच्चे रसूल तथा ईश्वर भक्ति का एलान करने वाले ने अति निःस्पृहतापूर्वक उत्तर दिया, कि मैं तुम से कुछ लेना नहीं चाहता, तुम्हें कुछ

www.abulhasanalinadwi.org

देना चाहता हूँ, और वह मेरी यही तीन बातें हैं जिनका मैं तुम्हें आवाहन दे रहा हूँ। मैं चाहता हूं कि तुम्हें मृत्यु पश्चात् जीवन में सुख मिले और वह मेरी इन तीन बातों को अंगीकार करने पर आधारित है। आपके शब्दों ने ही नहीं अपितु आपके समस्त जीवन ने उन लोगों के इस विचार का खण्डन किया कि आप किसी सांसारिक वस्तु के इच्छुक हैं। विरोध ने ऐसा प्रचण्ड रूप धारण किया कि आपको मक्का छोड़कर मदीना जाना पड़ा, किन्तु खुदापरस्ती [ईश्वर भक्ति] के आवाहन का परित्याग नहीं किया।

निःस्वार्थता तथा ईश्वर-भक्ति का अनुपम उदाहरण

विरोधियों को अनुमान नहीं था कि आप इच्छा भक्ति से कितना परे हैं और इस धारा की विपरीत दिशा में तैरने की आपमें कितनी क्षमता तथा सामर्थ्य थी। आप इच्छाभक्ति से इतने दूर थे कि जब मक्का छोड़ने के कुछ समय पश्चात् आप फिर मक्का में आये और विजेता के रूप में आये, अपने विरोधियों को पराजित कर के आये, तब भी आपकी ईश्वरभक्ति युक्त भव्यता एवं विभूति में लेशमात्र अन्तर नहीं आया। विजय का उन्माद आप में तनिक भी उत्पन्न न हुआ। मक्का में आप का विजेता के रूप में प्रवेश इस वैभवशाली ढंग से हुआ, कि ऊँट पर सवार थे, शरीर पर अति साधारण वस्त्र थे तथा ज़बान पर ईश्वर की कृतज्ञता तथा अपनी विनय तथा नम्रता का प्रकटीकरण। इस अवसर पर एक व्यक्ति आपके समक्ष आया और आपके प्रताप से कांपने लगा। आपने कहा, घबराओ नहीं मैं

www.abulhasanalinadwi.org

क़ुरैश[1] की उस निर्धन स्त्री का पुत्र हूँ, जो सूखा गोश्त खाया करती थी।' विचार कीजिये ! क्या कोई विजेता ऐसे अवसर पर ऐसी बात कह सकता है, जिससे उसका प्रताप एवं भय लोगों में से निकल जाय। ऐसे समय तो कोशिश की जाती है, कि अधिक से अधिक भयभीत किया जाय—आप आज भी देखते हैं, तथा आज से पहले की दशा का इतिहास में अध्ययने करते हैं कि जिन लोगों के हाथ में शासन एवं सत्ता की बागडोर आ जाती है, उसका कुटुम्ब व संतान कितना लाभ उठाती है, और उसके बल पर कैसे भोग-विलास तथा आमोद-प्रमोद के मज़े लूटते हैं, किन्तु ईश्वर-भक्ति की ध्वजा फहराने वाले की दशा इस बारे में नितान्त भिन्न थी। आपकी सुपुत्री अपने घर का सारा काम-काज स्वयं अपने हाथ से करती थीं जिसके कारण आपके हाथों में घट्टे पड़ गए थे और शरीर पर मशक उठाने के चिन्ह पड़ गए थे। एक दिन उन्होंने सुना कि युद्धक्षेत्र से कुछ दास तथा दासियां पिताजी की सेवा में प्रस्तुत की गई हैं, बिचार किया कि मैं भी अपने लिये एक दास अथवा दासी मांग लाऊँ, अतः गईं, अपनी कठिनाई का वर्णन किया, हाथों के घट्टे दिखाये, हुज़ूर [सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही व सल्लम] ने फ़रमाया—'बेटी ! मैं तुम्हें दास तथा दासी से कहीं अच्छी वस्तु प्रदान करता हूँ, दास तथा दासियां अन्य मुसलमानो के हिस्से में जाने दो, तुम सोते समय तेंतीस बार "सुबहानल्लाह", तेंतीस बार "अलहम्दुलिल्लाह", और चौंतीस बार "अल्लाहु अकबर" पढ़ लिया करो !' निस्वार्थता तथा ईश्वर भक्ति का कैसा अनु-

१—अरबों के एक वंश का नाम (अनु०) २—अति निर्धनता का प्रकाशन

www.abulhasanalinadwi.org

पम उदाहरण है। निःसंदेह आप ईश्वर-भक्तों के प्रधान थे, क्या कोई फिर भी आपकी बेनफ़्सी पर शंका कर सकता है। दूसरों के प्रति यह उदार भाव और अपने तथा अपनी संतान के लिये फ़क्र व फ़ाक़ा [दीनता] को प्रमुखता देना पैग़म्बर ही की शान है।

आज ऐसे लोग आपके सामने हैं, जिन्होंने पिछले कुछ दिन तथा वर्ष जेलें काट ली हैं, तो आज सत्ता प्राप्त होने पर उन कष्टों का सारा हिसाब ब्याज सहित चुका लेने के लिये तत्पर हैं--जब किसी व्यक्ति को सत्ता एवं शासन की शक्ति प्राप्त हो जाती है तो सामान्यतः वह अपने सगे सम्बन्धियों तथा अपनी औलाद को कानून की पकड़ से बचाने का प्रयत्न करता है, किन्तु ईश्वर भक्तों के सरदार की शान इस बारे में भी नितान्त अद्भुत तथा विचित्र थी। एक औरत पर चोरी का अपराध सिद्ध हुआ, आपने हाथ काट देने का ..... आदेश दे दिया।[1] लोगों ने हुज़ूर [सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम] के एक समीपवर्ती एवं प्रिय सहाबी द्वारा सिफ़ारिश कराई कि क्षमा कर दिया जाय। आप का चेहरा क्रोध से लाल हो गया और फ़रमाया:--"ख़ुदा की क़सम! यदि स्वयं मुहम्मद [सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम] की बेटी फातिमा से भी यह अपराध हो जाय, तो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उसका भी हाथ काटेगा।"

१—इस्लामी कानून के अनुसार चोरी करने का दण्ड हाथ काट देना है। सऊदी अरब में इस्लामी कानून का प्रचलन है, जिसका परिणाम यह है कि पूरी सोने चाँदी की बाजार में दुकानों पर पर्दा डाल कर चले जाते हैं और एक पाई का सामान उठाने वाला कोई नहीं (अनु०)

www.abulhasanalinadwi.org

अपने अन्तिम हज के अवसर पर मुसलमानों के विराट् सम्मेलन में आपने कुछ नियमों तथा आदेशों की जन साधारण के सामने खड़े होकर घोषणा की कि जाहलीयत[1] के समस्त नियम भग किये जाते हैं, उनमें से सूदी लेन-देन आज से समाप्त—और सर्वप्रथम मैं अपने चचा अब्बास के सूदी क़र्ज़ को नियम विरुद्ध होने का निश्चय करता हूँ, अब उनका ब्याज किसी पर अनिवार्य नहीं, अब वह ब्याज का रुपया किसी से वसूल नहीं कर सकते। यह थी, ईश्वर भक्ति ! अन्यथा आजकल के विधायक यदि इस प्रकार का कानून बनाने वाले हों तो अपने सगे-सम्बन्धियों तथा मिलने-जुलने वालों से पहले से कह दें कि अमुक विधेयक आने वाला है, तनिक अपनी चिन्ता कर लो, ज़मींदारी की समाप्ति का विधेयक पास होने वाला है, जितनी भूमि निकाल सकते हो निकाल लो, या बेचना चाहो तो बेच दो। ऐसे ही अवसर पर आपने घोषणा की कि अज्ञान युग (इस्लाम के पूर्व) के समस्त वध रद्द किये जाते हैं अब उनका बदला नहीं लिया जा सकता, और इसके अन्तर्गत मैं सब से पहले (अपने वश का वध) रबीआ बिन हारिस का वध रद्द करता हूं—हमारे हुज़ूर इस अनुपम ईश्वर भक्ति के साथ (जिसके कुछ उदाहरण मैंने प्रस्तुत किये) इच्छा-भक्ति के इस सैलाब से निरन्तर लड़ते रहे, जो समस्त मानव जाति को बहाए लिये चला जा रहा था। अन्ततः उसको रोकने में सफल हुए और लोग विवश हुए कि आपकी बात पर कान धरें और मानें।

१—इस्लाम के पूर्व — अज्ञानता (अनु०)

www.abulhasanalinadwi.org

अतएव जिन लोगों ने आपकी इन तीन आधारभूत बातों को यथोचित मान लिया जो ईश्वर-भक्ति के जीवन के आधार हैं, तो फिर उन लाखों करोड़ों इन्सानों के जीवन की दिशा सहसा ऐसी परिवर्तित हुई कि आज के युग में विश्वास करना कठिन है, कि क्या ऐसे भी मनुष्य हो सकते हैं:—मैं उदाहरण के रूप में उनमें से कुछ का वर्णन करता हूं ।

आपका आवाहन स्वीकार करने वालों में से एक अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ीयल्लाहु अनहु) भी थे, जो आपके स्वर्गवास के पश्चात् आपके सर्व-प्रथम उत्तराधिकारी, और इस्लामी राज्य के शासक भी हुए । उनकी बे नफ़्सी की यह दशा थी कि यद्यपि इस्लामी राज्य के सबसे बड़े अधिकारी थे, किन्तु जीवन इस प्रकार व्यतीत करते थे कि आपके घरवाले मुंह मीठा करने के लिये तरसते थे । एक दिन धर्म पत्नी ने निवेदन किया कि बच्चों का मन कुछ मीठा खाने को चाहता है, तो उत्तर दिया कि राजकोष तो हमारा मुंह मीठा करने का ज़िम्मेदार नहीं है, हाँ जो कुछ वहां से हमें प्रतिदिन मिलता है, उसी में से अगर तुम कुछ बचा सको तो बचा लो और कोई मीठी वस्तु पका लो । उन्होंने रोज़ाना के ख़र्चे में से प्रति दिन थोड़ा-थोड़ा बचाकर थोड़े से पैसे जमा कर लिये और एक दिन हज़रत अबू बक्र को दिये कि इसका कुछ सामान ला दीजिये ताकि आज कुछ मीठी वस्तु पका लूं । आप वह पैसे लेकर ख़ज़ान्ची के पास चले गए और पैसे राज कोष में जमा कर दिये और कहा कि यह उसी

www.abulhasanalinadwi.org

ख़र्च में से है जो हमे राजकोष से मिलता है, इतने दिनों में बचाया हुआ है, ज्ञात हुआ कि हमारा ख़र्चा इससे कम में चल सकता है, अतः अब हमें इतना कम कर के दिया जाय।

दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़ के शासन काल में, जब मुसलमानों ने बैतुल मक़दिस[1] पर विजय प्राप्त की और हज़रत उमर स्वयं वहाँ गए, साथ में एक दास था, परन्तु इस्लामी राज्य के सर्वोत्तम अधिकारी के पास सवारी केवल एक थी, थोड़ी दूर सवार होते थे थोड़ी दूर दास को सवार करके स्वयं पैदल चलते थे। जिस समय बैतुल मक़्दिस में प्रवेश कर रहे थे, दास सवारी पर था और स्वयं पैदल और वस्त्र में कई पेवन्द लगे हुए थे। आपही के शासन-काल में एक बार भीषण अकाल पड़ा, तो आप वह भोजन करना उचित न समझते थे जो जन-साधारण को उपलब्ध न हो।

हज़रत ख़ालिद जो मुस्लिम सेना के सेनापति थे, और स्वयं हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने सैफ़ुल्लाह (अल्लाह की तरवार) की उपाधि देकर सम्मानित किया था, ऐसे संयम शील तथा इच्छा-भक्ति से इतनी दूर थे कि एक बार उनकी किसी ग़ल्ती के कारण ठीक युद्धकाल में तथा युद्ध क्षेत्र में उनके पास हज़रत उमर की ओर से पदच्युति का आदेश मिला, ललाट पर बल तक न पड़ा और कहा, "यदि अब तक मैं उमर की प्रसन्नता के लिये लड़ता था या अपनी ख्याति हेतु लड़ता था तो अब न लड़ूंगा, परन्तु यदि मैं अल्लाह के लिये लड़ता था तो

१—यरोशलम नगर

www.abulhasanalinadwi.org

सेनापति के बजाय एक साधारण सिपाही के समान उसी प्रकार लड़ता रहूंगा। इस के बिल्कुल विपरीत इस युग का नवीनतम उदाहरण आपके समक्ष मैक आर्थर का है, जिन्हें अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रूमन ने कोरिया में लड़ने वाली सेना के सेना-अध्यक्ष पद से पदच्युत कर दिया गया तो वह अति क्रोधित हुए और ट्रूमन की अध्यक्षता के पीछे पड़ गए।

ईश्वर भक्त समाज

और केवल यही गिनती के व्यक्ति नहीं अपितु आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमल) ने समस्त जाति तथा पूरे समाज का प्रशिक्षण इसी सिद्धान्त पर किया था, कि वह एक ईश्वर भक्त समाज हो। आपका एक सिद्धान्त यह था कि जो किसी उपाधि अथवा पद का इच्छुक तथा अभिलाषी हो, उसको पद नहीं देते थे। ऐसे समाज में किसी पद का उम्मीदवार बनने, अपनी प्रशंसा तथा गुणगान करने, और शासन के लिये एक दूसरे का मुक़ाबला करने की क्या गुंजाइश थी, जिसके समक्ष हर समय क़ुरआन मजीद की अग्रलिखित आयत[1] रहती हो :—

"यह आख़िरत (परलोक) का
घर हम उन लोगों के लिये
विशिष्ट रक्खेंगे जो धरती पर
अपनी श्रेष्टता नहीं चाहते,

१—वाक्य

www.abulhasanalinadwi.org

और न उपद्रव फैलाना चाहते
हैं, और फल ख़ुदा से भय करने
वालों का है।"

जिस वर्ग की इस तथ्य पर आस्था हो, वह क्या अपनी श्रेष्टता तथा उपद्रव एवं अशान्ति के लिये अपराध का साहस कर सकता है ?

मित्रो तथा महानुभावो ! यह ईश्वर-भक्ति का आवाहन था जो हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु-अलैहि व सल्लम) ने दुनिया के सामने प्रस्तुत किया था और परिणाम की दृष्टि से यह संसार का सर्वोत्तम लाभप्रद प्रयास है। कोई भी संसार के किसी और आवाहन का नाम लेकर नहीं बता सकता कि उसने संसार को इतना लाभ पहुंचाया। यद्यपि इस आवाहन के योगदान में मनुष्यों का इतना प्रयास तथा इतने साधन नहीं प्रयुक्त हुए जो आधुनिक आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक आन्दोलनों को प्राप्त हैं, किन्तु फिर भी इन समस्त आन्दोलनों के लाभ मिलकर भी इस एक आवाहन के लाभ का दसवाँ भाग भी हो सके।

ईश्वर भक्ति के अलमबरदार[1] इच्छा भक्ति के शिकार

आज भी संसार से आर्थिक एवं राजनीतिक अत्याचार तथा नैतिक भ्रष्टाचार की समाप्ति जभी हो सकती है जब संसार इस आवाहन को स्वीकार कर ले, परन्तु और किसी के

१—नेता, ध्वजा वाहक (अनु०)

www.abulhasanalinadwi.org

बारे में क्या कहा जाय जब कि स्वंय इस आवाहन के अलम बरदार इच्छा भक्ति में व्यस्त हो गए। इच्छा भक्ति तो चोट खाये हुए बैठी थी, उसने अवसर पाकर ईश्वर भक्ति के अलम वरदारों से भलीभांति बदला चुकाया, जिन्होंने कभी उसे पराजित किया था और वह मुसलमान जिसकी विशेषता था :—

"तुम सर्वोत्तम उम्मत हो,
निकाली गई हो लोगो के लिये-
आदेश देते हो नेकी का और
रोकते हो बुराई से नहीं।"

खेद है ! आज स्वयं नफ़्सपरस्ती का शिकार है।

मुसलमानो ! तुमने बड़ा अन्याय किया। तुम्हारा काम तो ईश्वर-भक्ति का आदर्श बनना था, समस्त संसार को इसका आवाहन देना था, तुमने इच्छाभक्ति में ग्रस्त होकर अपनी भी क्षति की तथा समस्त संसार को विपत्ति में फंसा दिया। यदि तुम अपने कर्त्तव्य का पालन करते रहते तो न यह इच्छाभक्ति संसार में दुबारा प्रभुत्वशाली बनती और न संसार की यह दुर्दशा होती।

संसार की सबसे बड़ी आपदा फ़नसपरस्ती है।

आज संसार की सबसे बड़ी आपदा नफ़्स परस्ती है। संसार के बड़े-बड़े नेता तथा शान्ति के अलम बरदार (ट्रूमेन,

www.abulhasanalinadwi.org

चर्चिल तथा स्टालिन) सबसे बड़े इच्छाभक्त हैं, यह अपनी नफ़्स परस्ती में तथा जातीय अभिमान (जो इच्छाभक्ति की एक विकास शील एवं चरमोत्कर्ष की इकाई है) में दुनियाँ को तहस-नहस करने पर तुले हुए हैं। परमाणु बम से अधिक भयंकर नफ़्स परस्ती है जिसने संसार को नष्ट कर दिया। लोगों को परमाणु बम पर क्रोध आता है कि हाहाकार मचा देगा। मैं कहता हूँ परमाणु बम का क्या अपराध, वास्तविक अपराधी तो उसका बनाने वाला है और इससे भी पहले वह संस्थाएँ तथा वह सभ्यता है जिसने इस परमाणु बम को जन्म दिया और इस सबका मूल आधार वह इच्छाभक्ति है जिसने इस सभ्यता को जन्म दिया।

हमारा आवाहन

मित्रो ! हमारा आवाहन तथा आन्दोलन बस यही है और इसी उद्देश्य के लिये है कि नफ़्सपरस्ती के विरुद्ध एकमोर्चा स्थापित किया जाये, ईश्वर भक्ति की जीवन पद्धति को संसार में सार्वजनिक रूप दिया जाय। हमने इसी उद्देश्य हेतु यह विशिष्ट सभाएं आयोजित की हैं और केवल इसी उद्देश्य हेतु साप्ताहिक सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है, जहाँ प्रत्येक जाति एवं प्रत्येक वर्ग के लोगों को एकत्र होने को कहा जाता है और उनके सामने ईश्वर भक्ति के आवाहन के सबसे बड़े अलम बरदार हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलहि व सल्लम) की शिक्षाओं, उनके जीवन चरित्र तथा उनके साथियों के जीवन-चरित्र को प्रस्तुत किया जाता है, जो वास्तविक ईश्वर भक्ति का मार्गदर्शन

www.abulhasanalinadwi.org

करने वाले हैं, और हमारे विश्वास के अनुसार उन्हीं में मानवता का कल्याण तथा कठिनाइयों का हल विद्यमान है। हमारा कार्य तथा हमारा आवाहन एक खुली हुई पुस्तिका है, जिसका मन चाहे पढ़ ले।

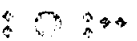

www.abulhasanalinadwi.org